तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 10, अंक- 2, जनवरी 2022 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सदा हमें यायावरी, देती जग की सीख
पुस्तक है यदि गुड़ सुनो, सैर सपाटे ईख

घुमक्कड़ी के शौक से, मिलती सीख अपार

घुमक्कड़ी के शौक से, मिलती सीख अपार ।
पर्वत कहते झुक नहीं, नदी कहे चल पार ।।

बड़ा जरूरी मानिए, भ्रमण शिक्षण में आज ।
देख-देख जब सीखता, बनता तीरंदाज़ ।।

सदा हमें यायावरी, देती जग की सीख ।
पुस्तक है यदि गुड़ सुनो, सैर सपाटे ईख ।।

मोरनी हिल्स ने दिया, ऐसा सबको जोश ।
यूनम चोटी चढ़ गये, बालक ज्यूँ खरगोश ।।

सारा समुन्दर पी गई, नन्ही-नन्ही प्यास ।
बालक पर्वत पर चढ़े, भर मन में उल्लास ।।

बाल मनों में अब यहाँ, नई पड़ी है लीक ।
जय हरियाणा बोलते, चढ़ यूनम की पीक ।।

बड़ा जरूरी मानिए, भ्रमण शिक्षण में आज ।
देख-देख जब सीखता, बनता तीरंदाज़ ।।

प्रकृति संग जो पले, फलती है वह कौम ।
देख गिलहरी नाचती, तन का इक इक रोम ।।

एक नज़ारा देखकर, पढ़ ली कई किताब ।
सैलानी बनकर गये, लौटे देखकर आब ।।

जोश मनाली में भरा, और लौटा प्रदेश ।
हर बालक है कर रहा, अब उदाहरण पेश ।।

हरियाणा ने पेश की, देखो बड़ी मिसाल ।
ऊँची चोटी जा चढ़े, नन्हे सब गोपाल ।।

राज कुदरती अब यहाँ, देखे सभी उघाड़ ।
कभी मनाली घूमते, चढ़ते कभी पहाड़ ।।

- श्रीभगवान बव्वा,
प्रवक्ता अंग्रेजी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, लुखी ,रेवाड़ी

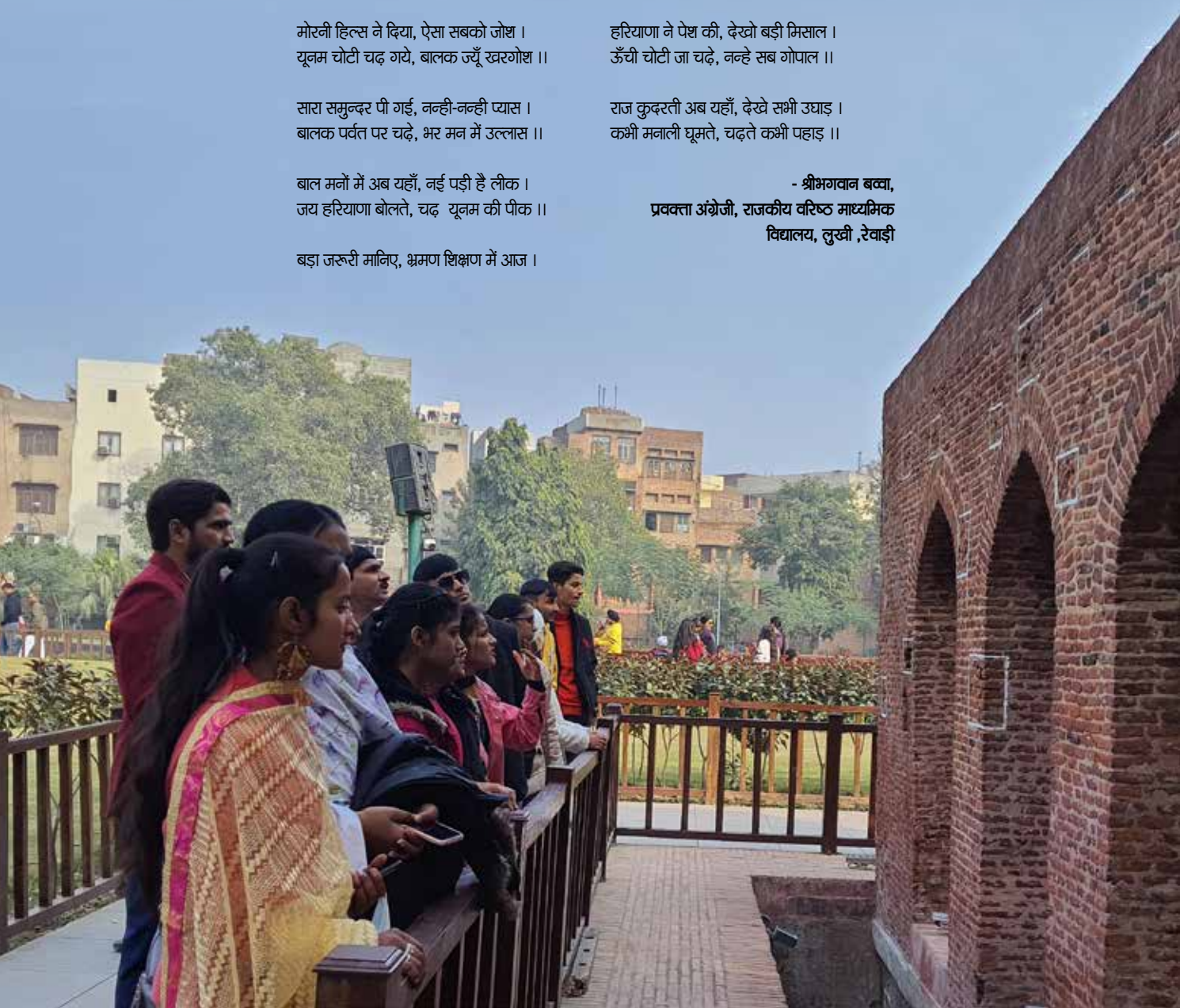

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

जनवरी 2022

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"मुश्किलें लाख आएँगी,
ज़िंदगी की राह में रखना
तू सबर। मिल जाएगी तुझे
मंज़िल इक दिन, बस जारी
रखना तू सफर।"

- शैक्षणिक भ्रमण-आयोजन में सबसे आगे हरियाणा 5
- हरियाणा शिक्षा विभाग की अनूठी पहल- शैक्षणिक भ्रमण 12
- घूम-घूम कर सीखना देता कमाल का अनुभव 14
- शैक्षणिक भ्रमण ने बदली बेटियों की सोच 18
- सीखने को आनंद से जोड़ता शैक्षिक भ्रमण 19
- ज्ञान सर्जना का मुक्त प्राकृतिक मंच है शैक्षिक भ्रमण 22
- खेल-खेल में विज्ञान 24
- विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा को 'सुशासन पुरस्कार' 28
- मंत्रमुग्ध करती है छात्रा तन्नू की जादुई आवाज़ 30
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अधीर न हों 31
- Online Trainings 32
- Twilight is her own Artist 34
- Change your mind set 35
- Live a Truthful life 36
- The Sea Sighs 37
- NISHTHA: An Initiative to Produce Tech-Savvy Teachers 38
- Queenie 40
- Compendium of Academic Courses After +2 44
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ कोलाज के सभी चित्रः डॉ. ओमप्रकाश कादयान

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

सफ़र जो धूप का किया तो तजुर्बा हुआ... वो जिंदगी ही क्या जो छाँव-छाँव चली

आस्ते भग आसीनस्य, ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः। शेते निपद्यमानस्य, चराति चरतो भगश्चरैवेति। संस्कृत के इस श्लोक का अर्थ है- बैठे हुए मनुष्य का सौभाग्य बैठा रहता है, उठ कर खड़े होने वाले व्यक्ति का सौभाग्य भी उठ कर खड़ा हो जाता है, लेटे हुए मनुष्य का सौभाग्य सोया रहता है, और चलने वाले व्यक्ति का सौभाग्य उसके साथ-साथ चल पड़ता है। इसीलिए कहा गया है- चरैवेति-चरैवेति। रुका हुआ पानी भी जल्दी ही सड़ जाता है। अतः चलना ही ज़िंदगानी है, और रुकना मौत की निशानी। भ्रमण से ही तो रास्ते के उन मंजरों से परिचय होगा, जो कई ऐसे पाठ हमें सिखाएँगे, जिन्हें न तो किताबों ने पढ़ाया होगा, न उस्तादों ने सिखाया होगा। स्कूली विद्यार्थियों के जीवन में ये भ्रमण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनसे विद्यार्थी उस व्यावहारिक ज्ञान को प्राप्त करते हैं, जो विद्यालय की चार-दीवारी में नहीं पाया जा सकता। किसी प्राकृतिक स्थान पर जाकर वहाँ के नैसर्गिक सौंदर्य का आनन्द, ट्रैकिंग या पर्वतारोहण सरीखी साहसिक गतिविधियों से साहस व भय पर जीत पाने की सीख, ऐतिहासिक-यात्रा से स्थान विशेष से जुड़े इतिहास की जानकारी, किसी संस्थान, कार्यालय या कारखाने में जाकर वहाँ की कार्यप्रणाली से परिचय, खेत-खलिहानों से कृषि-कर्म और वनस्पति विज्ञान की जानकारी, किसी चिड़िया-घर, म्यूज़ियम, स्मारक में जाकर वहाँ की चीज़ों को देखकर जो प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होता है, वह जीवन भर भुलाया नहीं जा सकता। हर्ष का विषय है कि प्रदेश के विद्यार्थियों को विभाग द्वारा भ्रमण के अनेक अवसर मुहैया कराए जा रहे हैं, जिनकी विशद जानकारी प्रस्तुत अंक आपको देगा। सदा की भाँति आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित।

-संपादक

शैक्षणिक भ्रमण-आयोजन में सबसे आगे हरियाणा

डॉ. प्रदीप राठौर

शिक्षा शास्त्रियों का मानना है कि शिक्षण को अधिक से अधिक सरल, सजीव, रोचक एवं ग्राह्य बनाना चाहिये। जितनी सक्रिय हमारी ज्ञानेंद्रियाँ होंगी, उतना ही अधिक शिक्षण प्रभावी होगा। शिक्षाविदों ने अनुसंधानों से सिद्ध कर दिया है कि शिक्षण को प्रभावी बनाने में क्षेत्रीय भ्रमण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। दरअसल शैक्षिक अनुभवों के द्वारा छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है और कबीर के शब्दों में कहें तो 'कागद की लेखी' से 'आँखिन की देखी' ज्यादा असरदार होती है। 'एडगर डेल' ने अपनी पुस्तक 'ऑडियो वीडियो मैथड्स इन टीचिंग' में माना है कि दृश्य-श्रव्य सामग्री में ऐसी सामग्रियों का शिक्षण में प्रयोग अधिक सफल रहता है, जिसमें ये दोनों गुण हों। शैक्षिक भ्रमण भी ऐसा ही साधन है। भ्रमण विभिन्न स्थानों के हो सकते हैं। स्थान विशेष में बदलाव से भ्रमण के कुछ उद्देश्य बदल सकते हैं, लेकिन कुछ तो एक जैसे ही रहते हैं। उद्देश्य के अनुरूप भ्रमण के स्थान का चयन किया जा सकता है। स्थान के लिहाज से देखें तो इनमें बहुत विविधता है। ये स्थान कोई ऐतिहासिक स्थल, पर्वतीय स्थल, समुद्री तट, वन्य प्रदेश, राष्ट्रीय उद्यान, चिड़िया-घर, शहीदी स्मारक, धार्मिक स्थान, संग्रहालय, विज्ञान भवन, आकाशवाणी, विधानसभा, डाक-घर, कारखाने तथा और भी बहुत सारे हो सकते हैं। हम हर्ष के साथ यह बात कह सकते हैं कि विद्यालय शिक्षा विभाग के द्वारा अपने विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमणों के बहुत से अवसर प्रदान किए जाते हैं।

क्या हैं शैक्षणिक भ्रमणों के उद्देश्य-

- भ्रमण विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक व भावात्मक योग्यता का विकास करते हैं।
- भ्रमणों से उनकी अवलोकन व निरीक्षण शक्ति का विकास होता है।
- भ्रमण से उनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है। इससे उनके विचारों को व्यापकता मिलती है।
- भ्रमण के दौरान जब विद्यार्थियों को किसी ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सामाजिक या औद्योगिक केंद्र पर ले जाया जाता है तो वहाँ उन्हें ज्ञान का व्यावहारिक रूप मिलता है।
- स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े स्थलों का भ्रमण करके बच्चों में शहीदों के प्रति श्रद्धा व राष्ट्र-अनुराग पैदा होता है।
- भ्रमण के दौरान आँखों से देखने के बाद अनेक अस्पष्ट तथ्य व धारणाएँ स्पष्ट हो जाती हैं।
- भ्रमणों से अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ती है। आँखों से देखी चीजों को जब बाद में पुस्तक से पढ़ा जाता है तब वे सुग्राह्य हो जाती हैं।
- भ्रमण से विद्यार्थियों की निरीक्षण, अवलोकन व अन्वेषण की शक्ति बढ़ती है।
- विभिन्न प्राकृतिक स्थलों को देखकर विद्यार्थियों का सौंदर्य-बोध जागृत होता है।
- भ्रमण के दौरान परस्पर सहयोग, सहकारिता, सद्भावना, सहनशीलता व सामूहिकता की भावना विकसित होती है।
- सामान्य व विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों का समावेशन होता है।

प्रथम चरण : 26 नवंबर से 13 दिसंबर 2021 (छह दिवसीय)		
क्र.	जिले का नाम	तिथि
1	सिरसा	26 नवंबर से 31 नवंबर
2	फतेहाबाद	27 नवंबर से 1 दिसंबर
3	हिसार	28 नवंबर से 2 दिसंबर
4	जींद	29 नवंबर से 3 दिसंबर
5	रोहतक	30 नवंबर से 4 दिसंबर
6	झज्जर	1 दिसंबर से 5 दिसंबर
7	भिवानी	2 दिसंबर से 6 दिसंबर
8	चरखी दादरी	3 दिसंबर से 7 दिसंबर
9	रेवाड़ी	4 दिसंबर से 8 दिसंबर
10	महेन्द्रगढ़	5 दिसंबर से 9 दिसंबर
11	फरीदाबाद	6 दिसंबर से 10 दिसंबर
12	पलवल	7 दिसंबर से 11 दिसंबर
13	मेवात	8 दिसंबर से 12 दिसंबर
14	गुरुग्राम	9 दिसंबर से 13 दिसंबर

11 दिसंबर से 21 दिसंबर 2021 (चार दिवसीय)		
क्र.	जिले का नाम	तिथि
1	सोनीपत	11 दिसंबर से 14 दिसंबर
2	पानीपत	12 दिसंबर से 15 दिसंबर
3	करनाल	13 दिसंबर से 16 दिसंबर
4	कुरूक्षेत्र	14 दिसंबर से 17 दिसंबर
5	कैथल	15 दिसंबर से 18 दिसंबर
6	यमुनानगर	16 दिसंबर से 19 दिसंबर
7	पंचकूला	17 दिसंबर से 20 दिसंबर
8	अंबाला	18 दिसंबर से 21 दिसंबर

समग्र शिक्षा के तहत शैक्षणिक भ्रमण-

समग्र शिक्षा के तहत राज्य के भीतर व राज्य के बाहर एक्सपोज़र विज़िट्स का आयोजन किया जाता है। 2019-20 में विज्ञान संकाय के 220 मेधावी विद्यार्थियों को वैज्ञानिक महत्त्व के स्थलों का भ्रमण करने के लिए अवसर प्रदान किए गए। यह गतिविधि जिलेवार आयोजित की गई तथा इस पर लगभग साढ़े चार लाख रुपये की राशि खर्च की गई। इसी प्रकार इसी सत्र में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के 4,400 मेधावी विद्यार्थियों को राज्य के भीतर वैज्ञानिक महत्त्व के स्थानों का भ्रमण कराया गया। यह गतिविधि ज़िलेवार आयोजित हुई तथा इस पर लगभग नौ लाख रुपये की राशि खर्च की गई। इससे पूर्व विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रदेश की छात्राओं को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक महत्त्व वाले स्थानों पर, जैसे- कुरुक्षेत्र, दिल्ली, मथुरा, आगरा, भरतपुर के पक्षी अभयारण्य, राजस्थान में जयपुर, अक्षरधाम, लाल

किला, इंडिया गेट, लोटस टेंपल आदि स्थानों पर ले जाया जाता है। यात्रा के बाद छात्राओं को एक राइट-अप के माध्यम से अपने अनुभवों को साझा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इन गतिविधियों से विद्यार्थी न केवल अपने गौरवशाली इतिहास, समृद्ध विरासत से परिचित होते हैं, बल्कि उनकी वैज्ञानिक घटनाओं के प्रति वैचारिक स्पष्टता बढ़ती है।

साहसिक भ्रमण-

विभाग द्वारा गत पाँच वर्षों में अनेक एडवेंचर टूर, ट्रेकिंग, पर्वतारोहण अभियान, कोस्टल स्टडी टूर, डेजर्ट स्टडी टूर, नेचर स्टडी टूर का आयोजन किया गया है। इन गतिविधियों में विभिन्न सरकारी स्कूलों के छठी से बारहवीं कक्षा के तेरह हजार से अधिक मेधावी विद्यार्थी सफलतापूर्वक भाग ले चुके हैं।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत राजकीय विद्यालयों की मेधावी छात्राओं के प्रोत्साहन के लिए एक पहल के रूप में समृद्ध तटीय शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन प्रतिवर्ष केरल के शिक्षा विभाग के सहयोग से किया जाता है, जिसमें अब तक कक्षा नौवीं से बारहवीं कक्षा की लगभग एक हज़ार छात्राएँ भाग ले

चुकी हैं। प्रतिवर्ष मनाली में समर व विंटर एडवेंचर कैंपों का आयोजन नेशनल एडवेंचर क्लब इंडिया, चंडीगढ़ व हरियाणा टूरिज्म के सहयोग से किया जाता है जिनमें प्रतिवर्ष छठी से बारहवीं कक्षाओं के चार हज़ार से अधिक विद्यार्थी भाग लेते हैं। इनका उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास करना और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करना है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी भी इन कैंपों का हिस्सा बनते हैं।

राष्ट्रीय साहसिक संस्थान पचमढ़ी, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर के एडवेंचर कैंपों में हरियाणा प्रदेश के मेधावी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए भेजा जाता है। इन कैंपों में गत छह वर्षों के दौरान छह हज़ार से अधिक विद्यार्थी भाग ले चुके हैं। वर्ष 2018-19 के दौरान हरियाणा प्रदेश ने एडवेंचर कार्यक्रमों में भागीदारी के आधार पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव हासिल किया है।

हिमाचल से सटे हरियाणा के एकमात्र पर्वतीय क्षेत्र मोरनी और मल्लाह में भी हरियाणा पर्यटन निगम और राष्ट्रीय साहसिक क्लब (भारत) के सहयोग से समर व विंटर एडवेंचर कैंपों का आयोजन किया जाता है। हाल ही में यहाँ पहली बार राज्य स्तरीय विंटर एडवेंचर फेस्टिवल का आयोजन किया गया।

हरियाणा देश का एकमात्र राज्य है जहाँ विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2019 में प्रदेश में यह कार्यक्रम सैनिक स्कूल कुंजपुरा के सहयोग से आरंभ किया गया था, जिसमें अब तक पाँच बार हरियाणा के विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश के मनाली क्षेत्र में स्थित 5,289 मीटर की ऊँचाई पर स्थित 'फेडशिप पीक' पर सफलतापूर्वक चढ़ाई कर चुके हैं। इसके अलावा प्रदेश

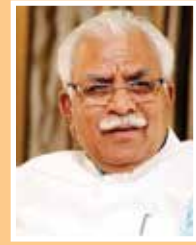

भ्रमण उपलब्ध कराते हैं प्राकृतिक प्रयोगशाला

बाहरी भ्रमण दरअसल एक प्रकार की प्राकृतिक प्रयोगशाला उपलब्ध कराते हैं। अगर व्यक्तिगत बात करूँ तो मुझे बचपन से भ्रमण बहुत लुभाते हैं। विद्यार्थी-काल में तो भ्रमण विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। इनके द्वारा विद्यार्थी पुस्तकीय दुनिया से बाहर निकल कर वास्तविक परिस्थितियों से परिचित होते हैं। शिक्षा शास्त्री मानते हैं कि दृश्य सामग्रियों में सर्वाधिक प्रभावशाली वास्तविक वस्तुएँ होती है, इनको देखने के लिए निश्चित रूप से विद्यालयों की चार-दीवारी से बाहर निकलना पड़ता है। यह हर्ष का विषय है कि हमने प्रदेश की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर अपने फ्लैगशिप कार्यक्रम 'स्वच्छ प्रांगण, सुगम शिक्षा व सुसंस्कार' के अन्तर्गत इस गतिविधि को शामिल किया था। तब से आज तक (कोरोना-काल के कारण सत्र 2019-20 छोड़ कर) हम लगातार अपने विद्यार्थियों को धार्मिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों के भ्रमण के अधिकतम अवसर प्रदान कर रहे हैं।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

एक 'देखना' सौ 'सुनने' से ज्यादा महत्त्वपूर्ण

कोई भी शिक्षण सहायक सामग्री भ्रमण का स्थान नहीं ले सकती, क्योंकि छात्रों को वास्तविक व प्रत्यक्ष ज्ञान क्षेत्र विशेष के भ्रमण से ही प्राप्त होता है। शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी होता है। चीनी कहावत है- 'एक देखना सौ सुनने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।' यदि हम ज्ञान को अनुभव केंद्रित बनाना चाहते हैं तो हमें पर्यटन का सहारा लेना ही पड़ेगा। पढ़ी हुई चीज भुलाई जा सकती है, देखी हुई नहीं। देखने से ही हम इस दुनिया का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए विद्यालय की चार-दीवारी से बाहर ले जा कर विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण कराए जाने बेहद आवश्यक हैं। हम गर्व से यह कह सकते हैं कि हम अपने विद्यार्थियों को लगातार ऐसे अवसर दे रहे हैं। इस वर्ष लगभग अढ़ाई हज़ार विद्यार्थियों को यह अवसर दिया गया है।

कँवरपाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

भ्रमण देते हैं फर्स्ट हैंड नॉलेज

भ्रमण से हम जो व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं वह कक्षा-कक्ष में बैठ कर कतई नहीं लिया जा सकता है। आँख की भूमिका अन्य ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा अधिक होती है। हम केवल सुनने या पढ़ने से ज्यादा देखना पसंद करते हैं। ऐतिहासिक स्थलों को देखकर अतीत के चित्र जीवंत होने लगते हैं। पुस्तकों में पढ़कर उनके बारे में जो धुँधली छवि बनती है, वह अधिक चमकदार हो जाती है। गुरु की नगरी अमृतसर, आस्था के केंद्र स्वर्ण-मंदिर, ब्रिटिश क्रूरता के प्रतीक जलियाँवाला बाग, सरहद के रखवालों के प्रति सम्मान जागृत करता वाघा बार्डर, विज्ञान संबंधी अनेक जिज्ञासाओं का शमन करने वाले कपूरथला के साइंस सिटी व प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू के सपनों के व ली कोर्बुजिए द्वारा डिज़ाइंड की गई सिटी ब्यूटीफुल के दर्शन विद्यार्थियों को ऐसे अनूठे अनुभव दे देते हैं, जो उनकी यादों में सदैव ताज़ा रहते हैं।

डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी लेह क्षेत्र में 6,153 मीटर की ऊँचाई पर स्थित भारत की सबसे ऊँची ट्रैक करने योग्य चोटी 'स्तोक कांगड़ी' पर भी सफलतापूर्वक आरोहण कर चुके हैं। इस वर्ष तो विद्यार्थियों को हिमाचल प्रदेश के लाहौल जिले में बारालाचा दर्रे के पास 6,111 मीटर ऊँची चोटी पर चढ़ने का सौभाग्य भी मिला।

कौशल विकास के लिए फील्ड विज़िट-

हरियाणा के एक हज़ार से अधिक विद्यालयों में एनएसक्यूएफ के तहत इस समय 14 भिन्न-भिन्न कौशलों में लगभग डेढ़ लाख विद्यार्थी व्यावसायिक दक्षता हासिल कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के हुनर को निखारने के लिए इन्हें संबंधित कौशल से संबंधित फील्ड विज़िट के लिए ले जाया जाता है। इन फील्ड विजिट के माध्यम से विद्यार्थी रियल टाइम वर्क एक्सपीरियंस प्राप्त करके करिकुलम के अनुसार अपने कौशल को उन्नत बनाते हैं। ये फील्ड विजिट वोकेशनल स्किल्स का एक अभिन्न अंग हैं। इससे विद्यार्थी यह जान पाते हैं कि अपने-अपने विद्यालयों में वे जो कौशल वे सीख रहे हैं, समाज में उनकी क्या उपयोगिता है तथा किस प्रकार भविष्य में करियर की संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए ऑटोमोबाइल के बच्चों को जो किताबी ज्ञान अध्यापक ने विद्यालय में दिया वह किस प्रकार ऑटोमोबाइल वर्कशॉप में इस्तेमाल हो रहा है, तथा वर्कशॉप में गाड़ियों की मरम्मत किस प्रकार हो रही है, यह सब दिखाने व सिखाने के लिए विद्यार्थियों के फील्ड विज़िट पर ले जाया जाता है। इसी प्रकार रिटेल के विद्यार्थी बिग बाज़ार तथा अन्य बड़ी दुकानों में, पेशेंट केयर के विद्यार्थी अस्पतालों व डिसपैंसरियों में, बैंकिंग फाइनेंस एंड सर्विसेज के विद्यार्थी बैंकों में व ब्यूटी एंड वैलनैस के विद्यार्थी ब्यूटी पार्लरों में भ्रमण के लिए ले जाये जाते हैं।

भ्रमणोपरांत लिपिबद्ध करें भ्रमण के अनुभव

प्रदेश भर के बच्चों ने बीते दिनों शैक्षणिक भ्रमण किए हैं। जिस प्रकार भ्रमण के दौरान चित्र खींच कर हम उस लम्हे को कैद करके रखना चाहते हैं, उसी प्रकार उस दौरान मन में आई अनुभूतियों को अगर हम लिपिबद्ध कर लेंगे, तो वे भी हमारे लिए एक अनुपम पूँजी बन जाएँगे। अध्यापकों को बच्चों को अपने अनुभव लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे न केवल इन अनुभवों का रिकॉर्ड बन जाएगा, बल्कि ये विद्यार्थियों की मौलिक लेखन क्षमता को भी निखारेंगे। विद्यार्थियों के लिखे यात्रा-अनुभवों को विद्यालय की दीवार-पत्रिका पर प्रदर्शित किया जा सकता है, प्रातःकालीन सभा में सुनाया जा सकता है या विद्यालय की पत्रिका में प्रकाशित किया जा सकता है। चुनींदा श्रेष्ठ लेखन प्रकाशनार्थ विभाग की मासिक पत्रिका 'शिक्षा सारथी' को भेजे जा सकते हैं।

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

कक्षा तत्परता कार्यक्रम के दौरान खूब हुए भ्रमण-

कक्षा तत्परता कार्यक्रम के दौरान हर विद्यालय ने बच्चों के लिए निकटवर्ती क्षेत्रों के शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन किया। विद्यार्थी विद्यालय परिसर से बाहर निकल कर अपने आसपास के परिवेश, संस्थाओं, धार्मिक स्थलों, संग्रहालयों, कारखानों, ऐतिहासिक स्थलों में गए। मकसद यही था कि वे पुस्तकीय ज्ञान के अलावा व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त कर सकें। सत्र में आरंभ के दिनों में लगाए गए ये भ्रमण विद्यार्थियों के लिए खूब उपयोगी हुए। इस दौरान बच्चों ने निकटवर्ती ईंट भट्ठे पर पहुँच कर ईंट बनाने की प्रक्रिया समझी। ऐसा नहीं कि इससे पूर्व उस भट्ठे के नज़दीक से बच्चे नहीं गुज़रते होंगे, लेकिन उस दिन मास्टर जी की देखरेख में भट्ठे पर काम करने वाले लोगों ने बड़े प्यार से विद्यार्थियों को पूरी प्रक्रिया समझाई होगी। बहुत से बच्चों ने अपने-अपने क्षेत्रों के डाकघरों व बैंकों में जाकर वहाँ विभिन्न प्रकार के फार्मों को भरना सीखा। निश्चित तौर पर यह ज्ञान न केवल बच्चों के लिए उपयोगी हुआ, बल्कि उसे सीख कर वे अनेक निरक्षर ग्रामवासियों की मदद करने योग्य भी बन गए। गाँव के वाटर वर्क्स के निकट से गुज़रने पर भी बच्चे उसकी प्रक्रिया से अनभिज्ञ थे, इस दौरान बच्चों ने पानी को स्टोर करने, शुद्ध करने व उसकी सप्लाई की प्रक्रिया को पहली बार जाना। शहरी क्षेत्रों के अध्यापकों के साथ विद्यार्थी पुलिस चौकी व थानों में गए। वहाँ उन्हें पुलिस की कार्यप्रणाली, यातायात नियमों व बालश्रम के बारे में कानून की जानकारी मिली। अस्तपालों में जाकर यह जाना कि किस-किस वार्ड में किस-किस रोग का उपचार होता है, रेलवे स्टेशन जाकर आरक्षण की जानकारी प्राप्त की व रेलों की समय-सारिणी को पढ़ना सीखा। इसी प्रकार बस स्टैंड जाकर बस में चढ़ने व उतरने के सुरक्षित तरीके को जाना। कहने का अभिप्राय है कि 'कक्षा तत्परता कार्यक्रम' के दौरान प्रदेश भर के हर विद्यालय में ऐसे भ्रमण आयोजित किए गए, जो विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी साबित हुए।

द्वितीय चरणः 19 दिसंबर से 31 दिसंबर 2021 (चार दिवसीय)		
क्र.	जिले का नाम	तिथि
1	रेवाड़ी	19 दिसंबर से 23 दिसंबर
2	फतेहाबाद	20 दिसंबर से 24 दिसंबर
3	झज्जर	21 दिसंबर से 25 दिसंबर
4	पलवल	22 दिसंबर से 26 दिसंबर
5	नूंह	23 दिसंबर से 27 दिसंबर
6	महेन्द्रगढ़	24 दिसंबर से 28 दिसंबर
7	सिरसा	27 दिसंबर से 31 दिसंबर
8	चरखी दादरी	28 दिसंबर से 1 जनवरी

29 दिसंबर से 9 जनवरी 2022 (पाँच दिवसीय)		
क्र.	जिले का नाम	तिथि
1	गुरुग्राम	29 दिसंबर से 2जनवरी
2	फरीदाबाद	30 दिसंबर से 3 जनवरी
3	सोनीपत	31 दिसंबर से 3 जनवरी
4	पानीपत	1 जनवरी से 4 जनवरी
5	भिवानी	2 जनवरी से 6 जनवरी
6	रोहतक	3 जनवरी से 7 जनवरी
7	जींद	4 जनवरी से 7 जनवरी
8	हिसार	5 जनवरी से 9 जनवरी

'प्रमोशन ऑफ साइंस' के लिए शैक्षणिक भ्रमण-

2016 में हरियाणा राज्य की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र को नई बुलंदियाँ देने के लिए विस्तृत कार्यक्रम बनाया था। इसमें तीन बातों पर विशेष बल दिया गया। वे थीं- स्वच्छ प्रांगण, सुगम शिक्षा व

विद्यार्थियों के साथ-साथ विकल्प व ऐस टूटोरियल से शिक्षा ग्रहण कर रहे सुपर-100 के विद्यार्थियों को भी भ्रमण का अवसर प्रदान किया गया। इतना ही नहीं कार्यक्रम को विस्तार देते हुए इस वर्ष छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण कराए गए। वैसे तो इस दौरान विद्यार्थियों को अपने-अपने जिलों के ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण कराए गए, लेकिन धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र, राजधानी दिल्ली व पिंक सिटी जयपुर के निकटवर्ती जिलों को इन ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कराया गया, यानी कैथल, अंबाला, करनाल आदि जिलों के बच्चों को कुरूक्षेत्र, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी आदि जिलों के विद्यार्थियों को जयपुर तथा नूंह, फरीदाबाद व गुरुग्राम के विद्यार्थियों को राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण के अवसर मिले। इस सत्र में लगभग एक करोड़ रुपये की राशि विभाग द्वारा इन भ्रमणों पर खर्च की गई थी।

सुसंस्कार। तीसरे बिंदु यानी सुसंस्कार के तहत यह माना गया कि विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास के लिए एवं उन्हें संस्कारवान बनाने की दिशा में विशेष प्रयत्न किए जाएँगे। एनसीसी, एनएसएस, स्काउटिंग-गाइडिंग, कानूनी साक्षरता, खेल, नैतिक शिक्षा, युवा उत्सवों के साथ-साथ एडवेंचर गतिविधियों व शैक्षणिक भ्रमणों पर विशेष ध्यान देने की बात हुई। इसी वर्ष से प्रदेश के इतिहास में पहली बार बड़े स्तर पर शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन आरंभ हुए। 2017-18 में 'प्रमोशन ऑफ साइंस कम्पोनेट' से लगभग 50 लाख रुपये की राशि ऐसे भ्रमणों पर विभाग द्वारा खर्च की गई थी। उस वर्ष विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अटारी बॉर्डर, स्वर्ण मंदिर, दुर्ग्याना मंदिर, साइंस सिटी कपूरथला व राजधानी चंडीगढ़ में भ्रमण की व्यवस्था कराई गई। उस वर्ष लगभग अढ़ाई हजार विद्यार्थियों को यह अवसर दिया गया था।

2019 में भ्रमण-कार्यक्रम का विस्तार-

वर्ष 2019 में हर जिले के विज्ञान संकाय के सौ-सौ

अगले सत्र में और बढ़ेगा शैक्षणिक भ्रमण का दायरा

जितने भी शैक्षणिक भ्रमण हरियाणा सरकार द्वारा स्कूली विद्यार्थियों के लिए करवाए जा रहे हैं, वे पूरी तरह से निःशुल्क होते हैं। बच्चों के आने-जाने की व्यवस्था से लेकर उनके खाने व ठहरने का पूरा प्रबंध शिक्षा विभाग द्वारा वहन किया जाता है। वर्ष 2018 व 2019 में 98 लाख की राशि खर्च की गई। इस वर्ष में उस परंपरा को दोहराते हुए शैक्षणिक भ्रमण का दायरा विज्ञान संकाय से बढ़ाया गया। इस बार वाणिज्य व कला के छात्र-छात्राओं के लिए भी इसमें सम्मिलित किया गया। शैक्षणिक भ्रमण को आज़ादी के 75वें अमृत महोत्सव से भी जोड़ते हुए भ्रमण में जलियांवाला बाग, अटारी बॉर्डर, करतारपुर स्थित जंगे-ए-आजादी ऐतिहासिक स्थल का दर्शन करवा विद्यार्थियों को आज़ादी के लिए देश के ज्ञात-अज्ञात वीरों के पराक्रम को दर्शाती गाथाओं से अवगत कराया गया। शैक्षणिक भ्रमण की योजना को भविष्य में शिक्षा विभाग और अधिक विस्तार देगा। छोटी कक्षाओं यानी छठी से आठवीं के विद्यार्थी भी इस तरह के भ्रमण का भाग बन सकें, इसके लिए भी योजना बनाई जा रही है। वर्ष 2022-23 के लिए शैक्षणिक भ्रमण के लिए और अधिक राशि की माँग भी कर दी गई है।

अमृता सिंह
अतिरिक्त निदेशक, संस्कृति विद्यालय
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

अब कला व वाणिज्य संकाय भी शामिल-

अब तक वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को ही भ्रमण के अधिक अवसर मिल रहे थे। अब आवश्यकता महसूस हुई कि कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को भी ऐसे अवसर प्रदान किए जाएँ। मौजूदा सत्र यानी 2021-22 में विज्ञान के विद्यार्थियों के साथ-साथ पहली बार कला व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को भी इन भ्रमणों में शामिल किया गया है। इन दोनों संकायों के भ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन किए गए। विज्ञान के विद्यार्थियों के टूर में साइंस सिटी कपूरथला रखा गया तो अन्य विद्यार्थियों को इसके स्थान पर ऐतिहासिक नगरी करतारपुर साहिब ले जाया गया।

वर्तमान सत्र में भ्रमण-शैड्यूल-

मौजूदा सत्र में भ्रमण शैड्यूल 26 नवंबर, 2021 से 11 जनवरी 2022 का रहा। विज्ञान संकाय का भ्रमण पाँच दिन का रहा। पहले दिन रात्रि में चलकर सुबह के समय अमृतसर पहुँच कर स्वर्ण मंदिर, जलियाँवाला बाग व अटारी बॉर्डर का भ्रमण करवाया गया। दूसरे दिन अमृतसर से कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल साइंस सिटी का भ्रमण करवाकर वहीं पर ठहराव की व्यवस्था थी। तीसरी सुबह चलकर यह भ्रमण अपने अंतिम पड़ाव चंडीगढ़ पहुँचा यहाँ रॉक गॉर्डन, रोज़ गार्डन, सुखना लेक व आर्ट एवं म्यूज़ियम गैलरी को देखा। रात्रि-विश्राम सिटी ब्यूटीफुल में होता है। अगले यानी पाँचवें दिन वापसी की यात्रा होती है।

कला संकाय का भ्रमण पाँच दिन का रहा। पहले दिन सुबह चलकर देर शाम को अमृतसर पहुँच कर वहाँ रात्रि ठहराव। अगली सुबह स्वर्ण मंदिर, जलियाँवाला बाग व अटारी बॉर्डर का भ्रमण। तीसरे दिन अमृतसर से करतारपुर स्थित जंगे-ए-आजादी का भ्रमण करके चंडीगढ़ पहुँचकर रॉक गॉर्डन, रोज़ गार्डन, सुखना लेक व आर्ट एवं म्यूज़ियम गैलरी को देखकर वहीं रात्रि ठहराव। अगली सुबह चंडीगढ़ से कुरुक्षेत्र पहुँच कर वहाँ के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण व रात्रि ठहराव। अगले दिन वापिसी।

भ्रमण का द्वितीय चरण करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल, और यमुनानगर जिलों के लिए 6 जनवरी से 12 जनवरी तक था। लेकिन ओमिक्रोन के बढ़ते मामलों के चलते हरियाणा सरकार के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए इसे आगामी आदेशों तक स्थगित कर दिया गया।

विभाग द्वारा दिए गए महत्त्वपूर्ण निर्देश-

विभाग द्वारा जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि भ्रमण के लिए तीन सदस्यीय कमेटी बनाई जाये जो भ्रमण व्यवस्था व खर्चे का हिसाब रखें। छात्र व छात्राओं के लिए अलग-अलग बसों की व्यवस्था करने व भ्रमण पर जाने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से सहमति पत्र लेने के निर्देश दिये गए। यह भी निर्देश दिया गया कि भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की प्रतिदिन दो बार उपस्थिति दर्ज की जाए।

विभाग द्वारा एजुकेशन ग्रुप टूअर के नाम से व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया है। यह आवश्यक किया गया है कि चलने से पूर्व पूरे दल की सामूहिक फोटो को व्हाट्सएप ग्रुप पर शेयर किया जाए। कोविड से बचाव के लिए यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये थे कि विद्यार्थियों के साथ जा रहे सभी अध्यापकों, बस चालक व उसके सहायक को कोविड अवरोधक टीका लगा होना चाहिये तथा विद्यार्थियों के साथ कोविड महामारी से बचाव संबंधी सभी जानकारियाँ साझा की जायें।

drpradeeprathore@gmail.com

रोचक ढंग से सीख पाते हैं फ़िजिक्स व गणित की अवधारणायें

विद्यालयों में विज्ञान विषय ज्यादतर सैद्धांतिक तरीके से पढ़ाया जाता है। अनेक बार अवधारणाओं को रटने पर बल दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों को भौतिकी, रसायन व जीव विज्ञान की मूल अवधारणाओं को समझने बड़ी दिक्कत आती है। इसी कारण विज्ञान विषय पढ़ने से उनका जी कतराने लगता है। शिक्षा विभाग ने विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल सांइस सिटी ले जाने की जो पहल की है, उससे भौतिकी, रसायन व जीव विज्ञान के नियमों का व्यावहारिक रूप साईंस सिटी में समझाया गया है। अगर विद्यार्थी इन मूल अवधारणाओं को वहाँ समझ लेता है तो ज़िन्दगी भर के लिए वह साइंस की इन अवधारणाओं को कभी नहीं भूलेगा। विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में विज्ञान विषय को इसलिए भी नहीं अपनाते क्योंकि उन्हें विज्ञान की मूल अवधारणाएँ स्पष्ट नहीं होती, क्योंकि उन्होंने इन नियमों को रट्टानुमा तरीके से याद किया होता है। शैक्षणिक भ्रमण की यह पहल इस बात को बढ़ावा देगी कि ये विद्यार्थी फिजिक्स और गणित की मूल अवधारणाओं को समझ कर आगे बढ़ पायें। निश्चित तौर पर इससे हरियाणा के विद्यार्थियों का विज्ञान के प्रति रूझान बढ़ेगा। यह कहा जा सकता है कि विभाग द्वारा आयोजित भ्रमण विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रहे है।

कुलदीप मेहता
सहायक निदेशक, शैक्षणिक प्रकोष्ठ
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

बेहद व्यवस्थित तरीके से आयोजित हुए शैक्षणिक भ्रमण

बच्चे अपने किताबी ज्ञान के अलावा जो कुछ देखते हैं या किसी स्थान पर भ्रमण के लिए जाते हैं तो इससे बच्चों को नया ज्ञान प्राप्त होता है। वे चीजों को देख करके बढ़िया तरीके से समझते हैं। विद्यार्थियों ने बताया कि यह शैक्षणिक भ्रमण उनके जीवन का यादगार पल बन गया है। इससे उन्होंने बहुत कुछ ग्रहण किया है। कुछ समय इकट्ठे रहने से उन्होंने एक दूसरे के साथ मिलकर बैठना, सहकारिता, सद्भावना का पाठ भी सीखा। बहुत से विद्यार्थियों से जब बात की तो उन्होंने बताया कि ये भ्रमण उनकी ज़िंदगी का यादगार अवसर बन गया है। बहुत से विद्यार्थी यह मांग करते दिखाई दिए कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित होने चाहियें जिससे वे जीवन में आगे भी बहुत कुछ सीख सकें। प्रदेश में आज भी बहुत से परिवार ऐसे हैं जो अपनी बेटियों को दूर-दराज के इलाके में या सैर सपाटे पर भेजना पसंद नहीं करते। विभाग द्वारा आयोजित शैक्षणिक भ्रमण के आयोजन ऐसे विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हुए हैं। ऐसे कार्यक्रम से छात्राओं का हौसला भी बढ़ा है। पूरा कार्यक्रम बहुत ही व्यवस्थित ढंग से आयोजित किया गया है।

संजय कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

हरियाणा शिक्षा विभाग की अनूठी पहल - शैक्षणिक भ्रमण

प्रवीन देसवाल

अक्सर कहा जाता है कि जिस वस्तु को हम देख लेते हैं वह हमारे मस्तिष्क में लंबे समय के लिए अंकित हो जाती है, उससे हमारे सोचने की शक्ति में भी वृद्धि होती है। इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए हरियाणा शिक्षा विभाग ने गवर्नमेंट स्कूलों में पढ़ने वाले 11वीं कक्षा के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया है। शैक्षणिक यात्रा में प्रदेश के 2200 छात्र व 220 अध्यापक-अध्यापिकाएँ, जिनमें प्रत्येक जिले से एक -एक विज्ञान एवं गणित का विशेषज्ञ जिला नोडल अधिकारी है, भाग ले रहे हैं। इस शैक्षणिक यात्रा में प्रत्येक जिले के 11वीं कक्षा में विज्ञान पढ़ रहे 50 लड़के व 50 लड़कियों को लिया गया है। शैक्षणिक भ्रमण का पूरा खर्चा शिक्षा विभाग द्वारा वहन किया जा रहा है। शैक्षणिक यात्रा से जुड़ी सारी राशि सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को मुख्यालय द्वारा वितरित की गई है। शिक्षा विभाग के अधिकारियों, शैक्षणिक भ्रमण से जुड़े हुए अध्यापक-अध्यापिकाओं की यही सोच है कि जो जानकारी विद्यार्थी वस्तुओं को स्वयं देखकर, अनुभव करके प्राप्त करते हैं, उससे उनके ज्ञान में अधिक वृद्धि होती है। इस प्रकार के भ्रमण के द्वारा विद्यार्थी सामुदायिक रूप में एकत्रित होकर रहना सीखते हैं, उनमें सामाजिकता की भावना पनपती है।

इस दौरान अमृतसर स्थित श्री हरमंदिर साहिब, जलियाँवाला बाग तथा अटारी बॉर्डर पर परेड देखने का अवसर प्राप्त करवाया गया। अमृतसर में एक रात्रि ठहराव के पश्चात बच्चों को कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल साइंस सिटी में विज्ञान से संबंधित विभिन्न गतिविधियों से परिचित कराया गया। विद्यार्थियों को विज्ञान से संबंधित कई प्रयोग भी करवाए गए। रात्रि में आकाशगंगा देखने का अवसर भी प्राप्त करवाकर आकाश को लेकर उनके मन में उठी कई जिज्ञासाओं को भी शांत किया गया। रात्रि ठहराव के पश्चात विद्यार्थी सुव्यवस्थित शहर चंडीगढ़ में पहुँचते हैं जहाँ पर उन्हें सेक्टर 10 स्थित आर्ट गैलरी, म्यूजियम जिसमें पृथ्वी का इतिहास, उत्पति, संरचना तथा मानव जीवन के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न करने वाले प्रश्नों के बारे में जानकारी मिलती है। उन्हें चंडीगढ़ स्थित नेक चंद की बहुत अद्भुत रचना रॉक गार्डन को दिखाया जाता है। इसके साथ लगती मनमोहक सुखना झील पर ले जाया जाता है तथा माँ भारती के वीर सपूतों को समर्पित सेक्टर-दो स्थित वॉर मेमोरियल में उन वीर सपूतों को नमन करने के लिए भी प्रेरणा दी जाती है, जिनकी बदौलत आज माँ भारती सर ऊँचा उठा कर खड़ी है।

6 नवम्बर से शुरू हुई इस यात्रा का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान की विभिन्न अवधारणाओं की जानकारी के साथ-साथ उनमें राष्ट्र-भावना को जागृत करना, सुंदर स्थानों का भ्रमण करवाना था, ताकि उनमें देश-प्रेम, प्रकृति-प्रेम और विज्ञान-प्रेम के संस्कार भरे जा सकें। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हरियाणा प्रदेश के 22 जिलों को दो ग्रुप में बाँटा गया। पहले ग्रुप में गुरुग्राम, मेवात, पलवल, फरीदाबाद, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, चरखी दादरी, भिवानी, रोहतक, सिरसा, फतेहाबाद, हिसार व जींद तथा दूसरे ग्रुप में पानीपत, कुरुक्षेत्र, सोनीपत, करनाल, कैथल, अंबाला, पंचकूला व यमुनानगर को रखा गया। पहले ग्रुप का भ्रमण 5 दिन व 4 रातों का तथा दूसरे ग्रुप का 4 दिन व 3 रातों का था। इस शैक्षणिक भ्रमण का दूसरा चरण 12 दिसंबर

जलियाँवाला बाग भ्रमण ने देशभक्ति का भाव जगाया

जलियाँवाला बाग भ्रमण के दौरान बच्चों की ही नहीं बड़ों की भी आँखें नम हो जाती हैं। दरवाजे से थोड़ा अंदर एक गैलरी में दीवारों पर दोनों ओर शहीदों की प्रतिमाएँ बनाई हुई हैं जो सबके मन में देश प्रेम-भाव तथा शहीदों के प्रति आदर व श्रद्धा भाव जगाती हैं। और अंदर जाकर आपको अमर ज्योति जगती मिलती है। उसके साथ ही एक कमरे में वीडियो के माध्यम से पर्दे पर शहीदों के दृश्य चलते रहते हैं। थोड़ा आगे मध्य में शहीद स्मारक तथा कई जगह पुरानी इमारतों पर उन गोलियों के निशान थे जो जनरल डायर ने निहत्थे व बेकसूर लोगों पर बरसाई थीं। एक तरफ वह कुआँ है जिसमें गोलियों के डर से सैकड़ों देशभक्त छलांग लगाते गए तथा मरते गए। कुछ गोलियों से मर गए तो कुछ भगदड़ में, कुछ कुएँ में दम घुट कर। ये अंग्रेज़ों के अत्याचार, निर्दयता, निरंकुशता का प्रतीक एक ऐसा नरसंहार था जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। भारत के इतिहास में 13 अप्रैल, 1919 का दिन काला दिवस था जिस दिन जनरल डायर के नेतृत्व में अंग्रेज़ी फौज ने हजारों निहत्थे, बुजुर्गों, महिलाओं व बच्चों पर दनादन गोलियाँ दागीं। सरकारी आँकड़ों में तो 484 शहीद हुए बताते हैं किंतु अनधिकारिक आँकड़ों के अनुसार हज़ार से अधिक लोग मारे गए थे। बाद में शहीद उधम सिंह ने 21 वर्ष बाद लंदन जाकर इस नरसंहार का बदला लिया था।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान
रावमा विद्यालय एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

से आरम्भ हुआ था।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साँझा करते हुए बताया कि उन्होंने इन पाँच दिनों में अपूर्व अनुभव प्राप्त किए हैं। ये उनके जीवन के यादगार अनुभव बन गए हैं।

राजकीय संस्कृति मॉडल स्कूल सिवानी के अमित, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पलवल के छात्र गुलशन, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भिवानी की संजना ने बताया कि विभाग द्वारा करवाया गया यह शैक्षणिक भ्रमण उनके जीवन के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने आकाश-गंगा में शुक्र व बृहस्पति ग्रह को देखने का जो अनुभव प्राप्त किया है उसे जीवन भर नहीं भुला पाएँगे। उन्होंने बताया कि इस दौरान उन्हें नए दोस्त बनाने का अवसर भी प्राप्त हुआ तथा अनेक नई बातें सीखने का मौका भी मिला। विभाग द्वारा ठहराने व भोजन का प्रबंध भी अति उत्तम रहा।

अंग्रेजी प्रवक्ता
राआवमा विद्यालय मोरनी हिल्स
ज़िला-पंचकूला, हरियाणा

वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरलता से सिखाता है साइंस सिटी

पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल की माता जी के नाम पर स्थापित उक्त साइंस सिटी 72 एकड़ के लंबे चौड़े भूभाग पर स्थित है। करीब 100 करोड़ रुपये की लागत से बनाए गए पुष्पा गुजराल साइंस सिटी में विज्ञान के अनेक पक्षों को बेहद रोचक एवं नवाचारी ढंग से प्रदर्शित किया गया है। डायनासोर पार्क, मानव शरीर संरचना, पक्षी विहार, ऊर्जा पार्क, थ्री-डी फिल्में, जैव संपदा एवं विविधता, अंतरिक्ष के रहस्य, चंद्रयान अभियान, खेलों में विज्ञान, क्लाइमेट चेंज, भूकंप प्रक्रिया तथा दैनिक जीवन में विज्ञान से जुड़ी गतिविधियों का उल्लेख साइंस सिटी में बड़ी रोचकता एवं सरलता से समझाया गया है। यहाँ विद्यार्थियों ने विभिन्न वैज्ञानिक पक्षों के अलावा विज्ञान एवं अंतरिक्ष से जुड़ी अनेक फिल्मों का लुत्फ उठाया, जिनमें एवरेस्ट नामक फिल्म ने नन्हे वैज्ञानिकों को भावविभोर कर दिया। साइंस सिटी में चारों ओर फैली हरियाली, ठहरने का बेहतरीन प्रबंधन, बेहद स्वादिष्ट भोजन, गाइड द्वारा सुरुचिपूर्ण ढंग से समझाना, सुरक्षा का उचित प्रबंधन, सभी प्रयोगशालाओं सेमिनार सभागारों तथा ऑडिटोरियम का प्रशंसनीय रखरखाव इस यात्रा को यादगार बनाए रखता है।

अजय कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

था दूर बड़ा प्यारा...

था दूर बड़ा प्यारा... यह दूर बड़ा प्यारा...!
धर्म-ध्यान, विज्ञान-कला संग देशप्रेम न्यारा!!

साइंस सिटी कपूरथला की, आई पहली बारी।
कण कण में विज्ञान बसा था, अद्भुत दुनिया न्यारी।
एवरेस्ट मूवी थी प्यारी, दूरबीन अरु तारा!
था दूर बड़ा प्यारा... ये दूर बड़ा प्यारा...!!

सोने का मंदिर अमृतसर, देख झुका हर माथा।
जलियाँवाला बाग बगल में, गाए गौरव गाथा।
तन मन था बाघा पर गाता, गूँजा जयकारा!
था दूर बड़ा प्यारा... ये दूर बड़ा प्यारा...!!

चंडीगढ़ के चौक मनोहर, न्यारी साफ-सफाई ।
रोज-गार्डन, रॉक- गार्डन, सुखना की अँगड़ाई ।
हरियाली हर मन को भायी,भाया उजियारा!
था दूर बड़ा प्यारा... ये दूर बड़ा प्यारा !!

सभी बड़ों ने टीमवर्क से, सारे फर्ज निभाए।
छोटों ने हर कहना माना, खड़े समय पर पाए।
सुनो 'नाहड़िया' गीत सुनाए, तन-मन इकतारा!
था दूर बड़ा प्यारा, ये दूर बड़ा प्यारा!!

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक, रसायन शास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी, रेवाड़ी, हरियाणा

घूम-घूम कर सीखना देता कमाल का अनुभव

नंद किशोर वर्मा

आमतौर पर स्कूली शिक्षा और इसकी व्यवस्था छात्र, शिक्षक एवं स्कूल के इर्द-गिर्द ही घूमती है। यह व्यवस्था प्राचीन काल में गुरुकुल परंपरा से लेकर चली आ रही है और वक्त के साथ इसमें काफी परिवर्तन भी हो रहे हैं। ये परिवर्तन इसलिए हो रहे हैं क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो एक समाज, एक व्यक्ति के बौद्धिक विकास की रीढ़ है। बिना शिक्षा के प्रकाश नहीं होता, यह बहुत बड़ा सच है और यही वजह है कि शिक्षा और इसके प्रसार के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों का सबसे बड़ा पहलू होता है कि बच्चे स्कूलों में पढ़ने आएँ और उनका ड्रॉपआउट घटे। शिक्षकों के अनुभवों को नई उड़ान देने के उद्देश्य से शिक्षा प्रणाली को समय-समय पर लगातार हो रहे परिवर्तनों के हिसाब से अपग्रेड किया जाता है।

इस प्रतिस्पर्धा के दौर में एक छात्र और एक शिक्षक का जो रिश्ता बनता है, उसे मजबूत बनाने की बहुत बड़ी जरूरत है। लेकिन यह शिक्षा सिर्फ स्कूलों में बैठकर किताबों से ही नहीं दी जा सकती। बच्चों को एक व्यावहारिक ज्ञान भी लेना बहुत जरूरी होता है। इसके लिए पिछले कुछ सालों से हरियाणा में बच्चों को एजुकेशनल टूर करवाए जा रहे हैं। ये शैक्षणिक भ्रमण न केवल बच्चों को नई दुनिया से रूबरू कराते हैं बल्कि इसके जरिए उन्हें वह शिक्षा मिल जाती है जो शायद किताबों में भी नहीं मिल पाती है। इसी तरीके का एक एजुकेशनल टूर अभी हरियाणा सरकार ने प्रदेश के सरकारी स्कूलों के विज्ञान संकाय के बच्चों के लिए करवाया। इन बच्चों को हरियाणा से सटे पंजाब के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों पर ले जाया गया और उन्हें इन स्थलों के बारे में,उनके इतिहास के बारे में, इनके महत्त्व के बारे में जानकारी दी गई। ये बच्चे और शिक्षक अमृतसर स्थित श्री हरिमंदिर साहिब, जलियाँवाला बाग, अटारी बॉर्डर, कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल साइंस सिटी तथा चंडीगढ़ स्थित म्यूजियम एवं आर्ट गैलरी, रॉक गार्डन, सुखना लेक पर गए। इस पूरे टूर पर इन छात्रों के अलग-अलग अनुभव है और इसके अलावा शिक्षकों के भी एक अलग अनुभव हैं। सबसे बड़ी बात यह देखने को मिली कि जो संबंध स्कूलों में बैठकर शिक्षक और उसके छात्र के बीच में उस मजबूती से नहीं बन पाते, ऐसे एजुकेशनल टूर में बहुत सुदृढ़ पाए जाते हैं। यह बच्चे घरों से दूर रहकर कुछ दिनों के लिए शिक्षकों के संरक्षण में नई दुनिया को देखते हैं। नया ज्ञान अपने हिसाब से बटोरते हैं और अनुभव को साँझा करते हैं। और यह एक ऐसा पाठ उनके जीवन में होता है जिसे कभी भुला नहीं पाते हैं। हरियाणा सरकार निश्चित तौर पर बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है जो

इन बच्चों को स्कूलों से निकालकर स्कूलों से ग्रुपों में ले जाकर ऐसे ऐतिहासिक और धार्मिक और अलग-अलग विषयों पर विद्यार्थियों को जानकारी दे रही है।

अक्सर कहा जाता है कि जिस वस्तु को हम देख लेते हैं वह हमारे मस्तिष्क में लंबे समय के लिए अंकित हो जाती है, उससे हमारे सोचने की शक्ति में भी वृद्धि होती है। इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए हरियाणा शिक्षा विभाग ने गवर्नमेंट स्कूलों में पढ़ने वाले 11वीं कक्षा के विज्ञान संकाय, वाणिज्य व कला संकाय के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया है। शैक्षणिक यात्रा में प्रदेश के 4,400 छात्र व 440 अध्यापक-अध्यापिकाओं ने, जिनमें प्रत्येक जिले से एक-एक विज्ञान एवं गणित का विशेषज्ञ जिला नोडल अधिकारी थे, ने भाग लिया। इस शैक्षणिक यात्रा में प्रत्येक जिले के 11वीं कक्षा में विभिन्न संकायों में पढ़ रहे 100 लड़के व 100 लड़कियों को लिया गया। शैक्षणिक भ्रमण का पूरा खर्चा शिक्षा विभाग द्वारा वहन किया गया। शैक्षणिक यात्रा से जुड़ी सारी राशि जिला शिक्षा अधिकारी को मुख्यालय द्वारा वितरित की गई। शिक्षा विभाग के अधिकारियों, शैक्षणिक भ्रमण से जुड़े हुए अध्यापक-अध्यापिकाओं की यही सोच है कि जो जानकारी विद्यार्थी वस्तुओं को स्वयं देखकर, अनुभव करके प्राप्त करते हैं, उससे उनके ज्ञान में अधिक वृद्धि होती है। इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण एक ओर छात्र-छात्राओं को खुले वातावरण में शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़ने का अवसर प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर भारत की विभिन्नताओं जैसे इतिहास, व्यापार, विज्ञान, शिष्टाचार और प्रकृति आदि से परिचय कराते हैं। इसके इलावा छात्र-छात्राओं में समूह में रहने की प्रवृत्ति, नायक बनने की क्षमता व भाईचारे की भावना प्रबल होती है।

राजकीय संस्कृति विद्यालय चुल्काना, पानीपत से छात्रा पूजा ने 'शिक्षा सारथी' को बताया कि 11 दिसंबर को वे अमृतसर पहुँचे। वहाँ से वे श्री हरमंदिर साहिब, जलियाँवाला बाग, अटारी बॉर्डर देखने के पश्चात अगले दिन कपूरथला साइंस सिटी पहुँचे। वहाँ पर पहुँच कर साइंस से संबंधित बहुत सारे प्रोजेक्ट देखे। जो चीजें अपनी किताबों में ही पढ़ी थीं, उन्हें साक्षात देखने का अवसर प्राप्त हुआ। चंडीगढ़ स्थित रॉक गार्डन में पहुँचकर यह समझ आया कि 3-आर, रीसायकल, रीयूज़ तथा रिड्यूस क्या हैं। इससे यह बात भी समझ आई कि हमें अपने पर्यावरण को बचाने के लिए उपलब्ध वस्तुओं को कैसे प्रयोग में लाना है तथा अनुपयोगी वस्तुओं को कैसे पुनः उपयोग में लाना है।

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मोरनी हिल्स, पंचकूला के छात्र मोहिल ने 'शिक्षा सारथी' से बातचीत करते हुए बताया कि 16 दिसंबर को पंचकूला से अमृतसर के लिए जब चले तो वहाँ पहुँचते ही श्री हरिमंदिर साहिब पहुँचे। वहाँ जाकर पहली बार सिख धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त हुई कि किस प्रकार से सिख धर्म के लोगों ने मानवता के लिए कुर्बानियाँ दीं। जलियाँवाला बाग जा कर यह पता चला कि अंग्रेज़ों ने हिंदुस्तानियों पर कितने ज़ुल्म ढाए। कितनी कुर्बानियाँ देकर हमारा देश आज़ाद हुआ। अटारी बॉर्डर पर पहुँचकर देश के लिए जोश जुनून की भावनाएँ जागृत हुईं, वह अविस्मरणीय है। पुष्पा गुजराल साइंस सिटी पहुँच कर दुनिया की विभिन्न प्रजातियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। उन चीजों का अवलोकन करने का मौका मिला जो इससे पूर्व टेलीविजन-स्क्रीन पर देखी थीं।

साक्षी शर्मा, गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मोरनी हिल्स पंचकूला 'शिक्षा सारथी' को बताती हैं कि शैक्षणिक भ्रमण ने उन्हें नई जानकारी का खज़ाना प्रदान किया है। सभी विद्यार्थी शिक्षा विभाग के बहुत शुक्रगुजार हैं कि उन्हें इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण का मौका दिया गया। जो बातें केवल उनके स्वप्न तक ही सीमित थीं उन स्थानों पर जाकर ऐसा लगा कि जैसे वे स्वप्न से बाहर निकलकर नई दुनिया में आ गए हैं। अमृतसर में श्री हरमंदिर साहिब में लंगर के दौरान अनुशासन देखकर बहुत प्रभावित हुए, वहीं अमर ज्योति पर शहीदों को नमन करके, अटारी बॉर्डर पर जवानों की परेड में 'जय हिंद' के नारे लगाकर हमारे जोश को एक नया रूप मिला। चंडीगढ़ स्थित रॉक गार्डन में हमें यह सीख प्राप्त हुई कि हम भी अपने आसपास की बेकार पड़ी वस्तुओं का सार्थक उपयोग करके उनसे अनेक प्रकार की कला-कृतियाँ बना सकते हैं।

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बतौड़, पंचकूला की छात्रा जाह्नवी ने 'शिक्षा सारथी' को बताया कि शैक्षणिक भ्रमण में जो सबसे अधिक विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को आकर्षित करने वाला स्थान रहा, वह था पुष्पा गुजराल साइंस सिटी, कपूरथला। साइंस सिटी में जाकर हर वर्ग के लोगों में विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को देखकर विज्ञान के प्रति आकर्षण व जिज्ञासा उत्पन्न होती है। आज की नई तकनीकों के बारे में जानकारी मिली। यहाँ आकर जाना कि मनुष्य जीवन पृथ्वी पर किस तरह विकसित हुआ। इसके अलावा विभिन्न ग्रहों की जानकारी भी मिली।

इस दौरान अमृतसर स्थित श्री हरमंदिर साहिब, जलियाँवाला बाग तथा अटारी बॉर्डर पर परेड देखने का अवसर प्राप्त करवाया जा रहा है। अमृतसर में एक रात्रि ठहराव के पश्चात बच्चों को कपूरथला स्थित पुष्पा गुजराल साइंस सिटी में विज्ञान से संबंधित विभिन्न गतिविधियों से परिचित कराया गया तथा वाणिज्य व कला संकाय के विद्यार्थियों को करतारपुर स्थित जंगे आजादी ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करवाया गया। विद्यार्थियों को विज्ञान से संबंधित कई प्रयोग भी करवाए गए। रात्रि में आकाश-गंगा दिखाई गई। रात्रि ठहराव के पश्चात विद्यार्थी चंडीगढ़ पहुँचे। यहाँ उन्हें सेक्टर 10 स्थित आर्ट गैलरी, म्यूजियम का भ्रमण कराया गया। यहाँ पृथ्वी का इतिहास, उत्पति, संरचना की जानकारी मिली। उन्हें चंडीगढ़ स्थित नेक चंद जी की सर्वश्रेष्ठ कृति रॉक गार्डन को दिखाया

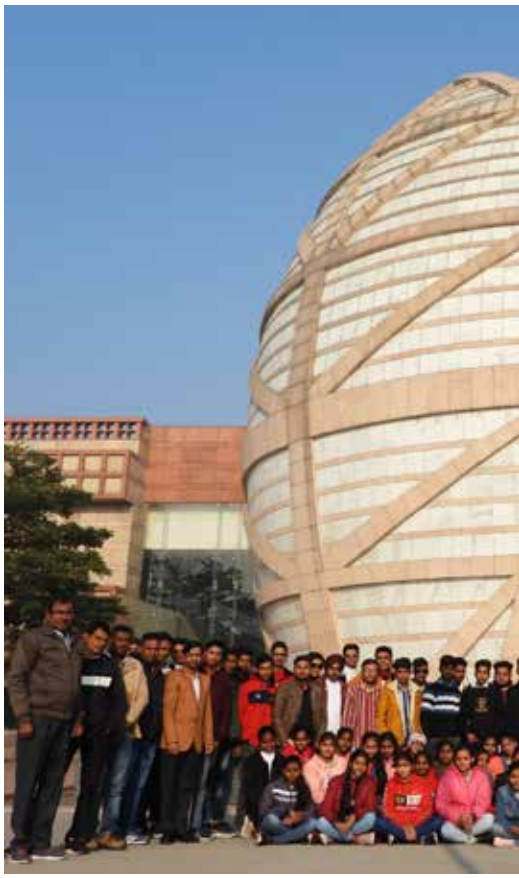

जशनदीप, छात्रा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पारवाला, पंचकूला ने 'शिक्षा सारथी' से बातचीत के दौरान बताया कि शिक्षा विभाग की बदौलत उन्हें जितना बेहतरीन शैक्षणिक भ्रमण का मौका मिला उसे वह शब्दों में भी अंकित नहीं कर पा रही हैं। वह बताती हैं कि इस प्रकार के भ्रमण से न केवल घूमने को मिलता है, वहीं साथ-साथ आपस में एक दूसरे से मिलकर रहने से परस्पर एकता और सद्भावना भी बढ़ती है। हमने सीखा कि परिवार से दूर जाकर नये माहौल में कैसे सामंजस्य स्थापित करके रहना है। उसने बताया कि जिस दिन वे हरमंदिर साहब पहुँचे, उस दिन खूब धुँध थी। धुंध में गोल्डन टेंपल देखने का अपना अलग ही आनंद रहा।

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बतौड़ के छात्र अनिकेत कुमार ने 'शिक्षा सारथी' को बताया कि अमृतसर स्वर्ण मंदिर में माथा टेकने के पश्चात जलियाँवाला बाग में उन्होंने जनरल डायर की क्रूरता के निशानों को देखा। हमें पता चला कि गोलियों की बौछारों से बचने के लिए बच्चों, बूढ़ों, महिलाओं ने अपने जीवन की कुर्बानी कुएँ में कूदकर दी। अटारी बॉर्डर पर भारत-पाकिस्तान के जवानों की जोश भर देने वाली परेड का तो कहना ही क्या। बॉर्डर पर तैनात जाँबाज हमें देश के लिए कुछ कर गुज़रने की प्रेरणा देते हैं। यह अवसर प्राप्त करके सब विद्यार्थी बहुत ही खुशी महसूस कर रहे हैं। पंचकूला से अमृतसर, कपूरथला व चंडीगढ़ के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करके व विद्यार्थियों के साथ रहकर उन्हें जानने व समझने का जो अवसर प्राप्त हुआ, वह अद्भुत रहा।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर 6 पंचकूला के फिजिक्स के प्रवक्ता किरणपाल 'शिक्षा सारथी' को बताते हैं कि 16 दिसंबर से 20 दिसंबर की शैक्षणिक भ्रमण यात्रा में शिक्षा विभाग द्वारा किए गए पर प्रबन्धों की जितनी भी सराहना की जाए, कम है। विद्यार्थियों के खाने, रहने व घूमने के लिए सभी प्रबंध बहुत ही कुशलता से किए गए थे। हालांकि इससे पूर्व भी अमृतसर का भ्रमण किया था, लेकिन विद्यार्थियों के साथ भ्रमण करने का अलग ही आनन्द है। विद्यार्थियों का उल्लास देखते ही बन रहा था। कक्षा में दब्बू से बन कर बैठे रहने वाले विद्यार्थी यहाँ खूब चहकते हुए नज़र आए। ऐसे भ्रमणों से शिक्षकों व विद्यार्थियों की परस्पर समझ भी बढ़ती है। हम शिक्षकों ने यहाँ विद्यार्थियों के संरक्षकों के साथ-साथ गाइड की भूमिका भी निभाई।

गया। मनमोहक सुखना झील पर ले जाया गया। माँ भारती के वीर सपूतों को समर्पित सेक्टर दो स्थित वॉर मेमोरियल भी ले जाया गया।

26 नवम्बर से शुरू हुई इस यात्रा का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न संकायों के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ उनमें राष्ट्र-भावना को जागृत करना, सुंदर स्थानों का भ्रमण करवाना था। प्रकृति, पर्यावरण से प्रेम बढ़ पाए। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हरियाणा प्रदेश के 22 जिलों को दो ग्रुप में बाँटा गया। पहले ग्रुप में गुरुग्राम, मेवात, पलवल, फरीदाबाद, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, चरखी दादरी, भिवानी, रोहतक, सिरसा,फतेहाबाद, हिसार व जींद तथा दूसरे ग्रुप में पानीपत, कुरुक्षेत्र, सोनीपत, करनाल, कैथल, अंबाला, पंचकूला व यमुनानगर को रखा गया। इस शैक्षणिक टूर के दूसरे ग्रुप का भ्रमण 12 दिसंबर को आरम्भ होकर 21 दिसंबर को संपन्न हुआ। वहीं वाणिज्य व कला संकाय का शैक्षणिक भ्रमण 19 दिसंबर से आरंभ होकर 14 जनवरी 2022 तक चलने का कार्यक्रम है। वाणिज्य व कला संकाय के भ्रमण में अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर, जलियाँवाला बाग, अटारी बॉर्डर के अलावा करतारपुर स्थित जंगे आजादी ऐतिहासिक स्थल व पुनः चंडीगढ़ के विभिन्न पर्यटन स्थलों का भ्रमण करवाया जा रहा है।

भमण के आयोजन में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि जितनी संख्या छात्रों की हो, उतनी ही छात्राओं की भी होनी चाहिए। साथ ही कला व वाणिज्य संकाय की प्रतिभागिता भी बराबर-बराबर सुनिश्चित की गई।

कहा जा सकता है कि एक ओर हरियाणा सरकार का शिक्षा विभाग जहाँ विद्यार्थियों को उत्कृष्ट व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास के चहुँमुखी अवसर प्रदान करने के लिए भी दृढ़ संकल्प दिखाई दे रहा है।

सहायक निदेशक
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा हरियाणा

शैक्षणिक भ्रमण ने बदली बेटियों की सोच

रमेश कुमार

हरियाणा की बेटियों सुषमा स्वराज, कल्पना चावला से लेकर साक्षी मलिक, जुड़वा बहनें ताशी और नुंग्शी मलिक, संतोष यादव, ममता सौदा, फोगाट बहनों ने सफलता का नया कीर्तिमान रचकर हरियाणा प्रदेश का मान व सम्मान बढ़ाया है। परंतु इसी हरियाणा राज्य में आज भी बहुत सी बेटियों को आगे आने के लिए काफी जद्दोजहद करनी पड़ रही है। ऐसे ही कुछ खट्टे-मीठे अनुभव हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक भ्रमण में भी सामने आए। आज भी समाज में लिंग भेद की संकीर्णता कितनी व्याप्त है, जिसे समाप्त करने में शिक्षकों को अभी और अधिक सुदृढ़ कदम उठाने होंगे, जिससे कि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके।

इस बारे में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जमालगढ़, नूंह की छात्रा मुस्कान ने बताया कि 'बेटी पढ़ेगी, मेवात बढ़ेगा' की सोच को आगे बढ़ाने में जो सोच उनके विद्यालय के प्रधानाचार्य सज्जाउदीन ने निभाई है, उसी का परिणाम है कि वह शैक्षणिक भ्रमण का भाग बन पाई।

मुस्कान की माँ मुबीना ने बताया कि वह स्वयं तो पढ़ी लिखी नहीं है, परंतु बेटी के आगे बढ़ने से लगता है कि वह स्वयं भी आगे बढ़ रही है। वह मेवात से कभी बाहर नहीं गई, परंतु बेटी की आँखों से व उसके शब्दों को सुनकर वह स्वयं भी इस भ्रमण का हिस्सा बन गई हैं।

छात्रा सबाना ने बताया कि जमालगढ़ विद्यालय के प्रधानाचार्या व अध्यापिका सज्जाउदीन जाहिरा के अभिभावकों को यह विश्वास दिलाने कि ये बेटियाँ सुरक्षित ढंग से जा रही हैं तथा सुरक्षित ही लौटेंगी के पश्चात ही उनके अभिभावकों ने उन्हें इतनी दूर भेजने की सहमति जताई। इस भ्रमण में जाकर पता चला कि लड़कियाँ को आगे बढ़ने के लिए अपने देश के बारे में जानकारी होना कितना जरूरी है। अगर भ्रमण पर न जाती तो पता ही न चलता कि राष्ट्र भावना की जो लौ आज जल रही है, उसके पीछे कितनों ने अपनी कुर्बानी दी है।

सबाना के पिता मम्मन ने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण में भेजने के पश्चात उनकी सोच भी बदली है और वे अब बेटी को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए भी आगे भेजेंगे।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कासन, गुरुग्राम की छात्रा कोमल ने बताया कि दूर पर आने के लिए अभिभावकों की बहुत मिन्नत करनी पड़ी। गाँव का माहौल ही ऐसा है कि लोग लड़कियों को घर से शहर नहीं भेजते। ऐसे में चार दिन के लिए भेजना तो बिल्कुल मुमकिन न था। पिता तो अंतिम क्षण तक भी इनकार ही कर रहे थे, परंतु मैं तो इसे शिवानी मैडम का उपकार कहूँगी कि उनकी बदौलत इस शैक्षणिक भ्रमण का भाग बनने का अवसर प्राप्त हुआ। सबसे पहले अमृतसर में स्वर्ण मंदिर, जलियाँवाला बाग घूमे पर जब सांइस सिटी पहुँचे तो मानो हमारे ख्वाबों को नए पंख लग गए हों। जो किताबों में पढ़ा था कि दिल कैसे धड़कता है, वह अनुभव किया तो सोचने की क्षमता में एकदम वृद्धि हो गई। पुस्तकों में जो पढ़ा, जब उसे करके देखा तो अलग ही खुशी का अनुभव हुआ। इस शैक्षणिक भ्रमण का सफलतापूर्वक आयोजन करने के लिए हरियाणा शिक्षा विभाग का बहुत-बहुत आभार।

प्रियंका, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, धौलडा, महेन्द्रगढ़ ने बताया कि राकेश सर व कुसुम मैडम ने इस भ्रमण के बारे में पूर्ण जानकारी दी। जब इस दूर के विषय के बारे में माता-पिता से बात की तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया। मन बहुत था इसलिए फिर शिक्षकों से उन्हें मनाने की मदद माँगी। बहुत मुश्किल से माने और दूर में जाने की इजाजत दी। अब दूर पर आकर लगता है कि हमारी सोच को नए पंख मिल गए हैं। जो कुछ देखा व सीखा, यह सदा स्मृतियों में ताज़ा रहेगा तथा जीवन को नई उड़ान मिलेगी।

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नारनौल महेन्द्रगढ़ की अध्यापिका कमलेश शर्मा, पीजीटी कॉमर्स ने बताया कि प्रियंका के पिता नहीं हैं, उसके ताऊ जी मना कर रहे थे। विद्यालय के प्रिंसिपल ओम प्रकाश ने ताऊ जी को समझाया। बहुत मुश्किल से भेजने के लिए राजी हुए। इस दूर से उसमें यह परिवर्तन आया कि दूर से आने पर उन बातों की जानकारी प्राप्त हुई, जो उन्होंने कभी केवल सुनी व पढ़ी थीं। तब वे भी बहुत खुश थे।

मॉनिटरिंग सदस्य, शैक्षणिक भ्रमण
प्रवक्ता, अर्थशास्त्र
रावमा विद्यालय, हंगोला, पंचकूला, हरियाणा

सीखने को आनंद से जोड़ता शैक्षिक भ्रमण

अरुण कुमार कैहरबा

बच्चे अपनी ऊर्जा व उत्साह के लिए जाने जाते हैं। यही ऊर्जा उनकी चंचलता और सक्रियता का कारण है। बच्चों की सीखने की चाह उनके नए-नए सवालों से झाँकती है। यदि अवसर मिले तो वे प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं। ये प्रश्न बड़ों को भी सीखने का मौका देते हैं। बच्चों की सृजनशीलता को उपयुक्त मंच प्रदान करने की जरूरत है। हालांकि सभी बच्चे एक से नहीं होते। बल्कि यह कहना उचित होगा कि हर एक बच्चा अपने आप में अनूठा और विलक्षण होता है। सभी बच्चों की रुचियाँ, अभिरुचियाँ, आदतें, सीखने की शैली और तरीका भी भिन्न होता है। इसलिए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में नीरसता और जड़ता बहुत खतरनाक चीज है। विविधतापूर्ण बच्चों की सृजनशीलता को पंख देने के लिए विषय-वस्तु, विधियों व प्रविधियों में भी विविधता की जरूरत होती है। इसलिए यदि कोई कड़े और बनावटी अनुशासन में रखकर बच्चों को अच्छी शिक्षा देने की कल्पना करता है, तो वह भूल-भुलैया में है। बच्चों की रचनात्मकता नवीनता और नवाचारों से शांत होती है। स्कूलों में अध्यापक कक्षा-कक्ष में शिक्षण कार्य करते हुए

सीखने-सिखाने के साधनों व विधियों में विविधता लेकर आते हैं। इसके बावजूद कुछ विद्यार्थियों के लिए यह नीरस लगता है। विद्यार्थियों में रुचियों का विकास करने और सीखने का भरपूर आनंद प्रदान करने के लिए अध्यापक बच्चों को कक्षा-कक्ष से बाहर लेकर आते हैं और पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं व खेल के मैदान में विद्यार्थियों को लाकर अपने तरीकों में और खुलापन लाते हैं। जब स्कूल प्रांगण के भी बाहर अध्यापक विद्यार्थियों को लेकर आते हैं और किसी स्थान, भवन, प्राकृतिक नज़ारों आदि को दिखाते हुए शिक्षण कार्य करते हैं तो सीखने-सिखाने के काम में एक नई ताज़गी आती है। ऐसे में सीखने वाले विद्यार्थियों के चेहरों पर खुशी और चमक देखते ही बनती है। अपने अध्यापकों के साथ स्कूल के दायरों से बाहर निकल कर किसी प्रतियोगिता में हिस्सेदारी करना, किसी ऐतिहासिक तथा ज्ञान-विज्ञान के स्थल का भ्रमण करना, किसी पुस्तक मेले या सांस्कृतिक मेले का भ्रमण करना विद्यार्थियों के लिए अविस्मरणीय होता है। इन अनुभवों को कोई भूलना भी चाहे तो वह उसे भुला नहीं सकता। हम सभी अपने ही बचपन व स्कूली शिक्षा के दिनों को याद करें तो वे अध्यापक भी हमें ससम्मान याद आ जाते हैं जोकि हमें किसी स्थान पर लेकर गए थे। जहाँ हमें लेकर जाया गया था और जो कुछ सिखाया गया था, वह भी हमें सहज ही याद आ जाता है। उसे याद करने की जरूरत नहीं होती। क्योंकि शैक्षिक भ्रमणों में हम जाकर, देखकर, चर्चाएँ करके व सवाल करके सीखते हैं तो वह अनुभव जीवन भर हमारे साथ होता है।

अपने अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक भ्रमण सीखने-सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है। हालांकि विद्यार्थी अपने माता-पिता के साथ भी विभिन्न स्थानों पर भ्रमण के लिए जाते हैं। लेकिन अध्यापकों के सान्निध्य व सहपाठियों के साथ घूमने का आनंद अलग ही होता है। स्कूल प्रशासन व अध्यापकों को इस विधि का हर संभव प्रयोग करना चाहिए। योजनाबद्ध ढंग से आयोजित किए गए शैक्षिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञान का नया संसार खोलने वाले होते हैं। घूमते हुए सहपाठियों के साथ कल्पनाओं से भरी चर्चाएँ और अध्यापकों का मार्गदर्शन बच्चों को सीखने के आनंद से भर देते हैं। इनसे उनमें निरंतर सीखने का उत्साह संचरित होता है।

शैक्षिक भ्रमण का एक और बड़ा लाभ अध्यापक व विद्यार्थियों के संबंधों में तरोताज़गी के संचार के रूप में होता है। स्कूल में पढ़ते-पढ़ाते हुए बच्चे अध्यापकों के बारे में एक राय बना लेते हैं। ऐसा ही अध्यापकों के साथ भी हो सकता है कि वे किसी बच्चे के बारे में एक रूढ़ दृष्टिकोण तैयार कर लें। बच्चों के खास तरह के व्यवहार से कई बार अध्यापकों में गुस्सा आता है। बच्चे अध्यापकों को गुस्सैल मान लेते हैं। विद्यार्थियों द्वारा अध्यापकों के नाम रख लिए जाते हैं, जोकि अधिकतर दोनों के रिश्तों में आई खटास की तरफ ही संकेत करते हैं। अध्यापकों और विद्यार्थियों में आई इसी नीरसता को तोड़ने में शैक्षणिक भ्रमण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से दोनों को एक दूसरे को अच्छी तरह से समझने का मौका मिलता है। दोनों में विश्वास पैदा होता है, जोकि सीखने-सिखाने के ठोस धरातल का कार्य करता है। किसी शैक्षिक भ्रमण से लौट के आने पर विद्यार्थी अपने अध्यापकों का कहा मानने में उत्साह प्रदर्शित करते हैं। ऐसा ही उनके अधिगम उत्साह व स्तर के रूप में भी होता है।

आम धारणा है कि शैक्षिक भ्रमण खर्चीले होते हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। हर विषय के शिक्षण में कितनी ही बार ऐसा होता है कि विषय-वस्तु की बेहतर समझ बनाने में अध्यापक को शैक्षिक भ्रमण की जरूरत महसूस होती है। समुदाय, पंचायती राज संस्थाओं व नगर निकायों की कार्यप्रणाली आदि पढ़ाते हुए यदि गाँव में सरपंच या नगरपालिका के पार्षद आदि से बात करके विद्यार्थियों को हम बाहर ले जाकर इनके प्रतिनिधियों से मिलवाते हैं और दिखाते हुए इनके कार्य के बारे में बताते हैं तो किताबों में पढ़ने-पढ़ाने व रटाने से कहीं ज्यादा आनंददायी हो जाएगा। इसी प्रकार डाकखाना व बैंक के कार्यों के बारे में पढ़ाने के साथ-साथ यदि बच्चों को इन स्थानों का भ्रमण करवा दिया जाए तो सीखी गई बातें अधिक उपयोगी हो जाएँगी । हमारे आस-पास भी इतिहास से जुड़े स्थान हैं, थोड़े से खर्चे में वहाँ पर विद्यार्थियों को ले जाया जा सकता है।

हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेज़ी भाषाओं के साहित्य का परिचय करवाने के लिए विद्यार्थियों को आस-पास होने वाले कवि सम्मेलन व संगोष्ठी में ले जाया जा सकता है। हो तो ऐसा भी सकता है कि अपने आस-पास के कवि या लेखक को स्कूल में बुलाया जाए और उनके साथ विद्यार्थियों की चर्चा करवाई जाए। लेकिन स्कूल के बाहर ले जाकर भी लेखक या कवि से बच्चों की मुलाकात व चर्चा करवाई जा सकती है। हमारे आस-पास ऐसी साहित्यिक संस्थाएँ हैं, जोकि साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन करती हैं। उनके आयोजनों में ले जाना विद्यार्थियों के लिए किताबों व साहित्य से जुडने के लिए बहुत उत्साहवर्धक होता है। अपने आस-पास के स्थानों पर विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूहों को ले जाना खर्चीला भी नहीं होता है। अनुभव की दृष्टि से यह बड़े या ज्यादा लंबी दूरी के शैक्षिक भ्रमणों से कहीं कमतर नहीं है।

वर्ष में एक बार तो अवश्य ही हर एक विद्यार्थी को अपने अध्यापकों के मार्गदर्शन में सहपाठियों के साथ शैक्षिक भ्रमण का अवसर मिलना ही चाहिए। थोड़ी दूरी पर तो शैक्षिक भ्रमण ज्यादा भी हो सकते हैं। ज्यादा लंबी दूरी पर बस, रेलगाड़ी या अन्य वाहनों पर सवार होकर जाना विद्यार्थियों की कल्पना को पंख लगा देता है। सभी बच्चे घर से खाना बनवाकर लेकर आएँ और अध्यापकों के साथ मिलकर खाना खाएँ। या फिर किसी लंगर या ढाबे पर खाने का स्वाद लें तो सोने पर सुहागे का काम करता है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण को प्रोत्साहित किया जाता है। वार्षिक रूप से ऐसे कई शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन किया जाता है। जिसमें लड़कियों, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को दूरवर्ती स्थलों के दर्शन करवाए जाते हैं। विभाग के द्वारा ऐसे कई शिविर भी आयोजित किए जाते हैं, जिनमें हिस्सा लेने से विद्यार्थी बहुत कुछ सीखते हैं। विभाग के द्वारा केरल राज्य में आयोजित किए गए समुद्र तटीय अध्ययन शिविर में हरियाणा के विभिन्न स्कूलों के बहुत से बच्चे हिस्सा ले चुके हैं। पर्वतीय स्थलों पर भी विभाग ने साहसिक गतिविधियों के शिविर आयोजित किए हैं, जिनमें विद्यार्थियों ने कमाल का प्रदर्शन करके प्रदेश भर का नाम रोशन किया है।

हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, करेड़ा खुर्द
खंड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर, हरियाणा

ज्ञान सर्जना का मुक्त प्राकृतिक मंच है शैक्षिक भ्रमण

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

'भारत माता की जय, भारत माता की जय!' गगनभेदी नारों से वातावरण में एक उल्लास एवं उत्साह की तरंग बह रही थी। दल के सभी लड़के-लड़कियाँ मस्ती आनन्द से झूमते खूब हो-हल्ला कर रहे थे। कुछ बच्चे एक-दूसरे के हाथों को पकड़े गोल-गोल घूम रहे थे तो कुछ बच्चे बधाई दे रहे थे। शेष सभी बच्चे विद्यालय ध्वज के सामने बिछी दरियों पर पंक्तिबद्ध बैठे समूह गीत गा रहे थे। प्रयाण बालगीत 'वीर तुम बढ़े चलो' के बोल हवा में तैर हमारे कानों से टकरा रहे थे- सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो। तुम निडर हटो नहीं, तुम निडर डटो वहीं। पास ही ऊँचे स्थान पर खड़ा एक लड़का लम्बे बाँस पर बँधी केसरिया रंग की दल-पताका बायें-दायें हिला रहा था।' लगभग सौ मीटर दूर से दूसरे दल (गांधी गोखले दल) के हम सभी लड़के-लड़कियाँ यह पूरा दृश्य आश्चर्य एवं जिज्ञासा से देख रहे थे, जो संकेत कर रहा था कि उस पहले दल (आज़ाद भगत सिंह दल) ने किला जीत लिया है और खज़ाना उनके हाथ लग गया है। हमारे चेहरे लटक गये थे। एक निराशा और हार का दुःख तन-मन पर हावी था। अभी कुछ देर तक दौड़ने वाले जोशीले कदमों में जैसे कोई मन भर का बोझ बाँध दिया गया हो। दल के मार्गदर्शक आचार्य जी हमें सांत्वना दे रहे थे। थोड़ा और करीब पहुँचे तो देखा कि पहले वाले दल के नायक के हाथों में खजाने वाला गत्ता शोभा बढ़ा रहा था जिसे बच्चे घेर कर खड़े थे। वे सभी दूसरे दल यानी कि हमारा इंतजार कर रहे थे। हमारे पहुँचते ही एक बार फिर जोर से जयघोष बोला गया। बच्चे उत्साह के अतिरेक में कुछ ज्यादा ही जोश में भर हल्लागुल्ला करना चाह रहे थे पर आचार्य जी के मना करने और बैठने का सकेत करने पर सभी दरियों पर बैठ गये। तब स्पर्धा संयोजक आचार्य जी ने घोषणा की कि 'खजाने की खोज' खेल का विजेता 'आजाद भगत सिंह दल' है। स्वाभाविक रूप से हमारा 'गांधी गोखले दल' असफल हो गया था। अब खजाना खोला गया जिसमें भुने चना की गुड़ वाली पट्टी (केक), केले, बूँदी के लड्डू और संतरे वाले कंपट थे जिन्हें सभी बच्चों को बाँटा गया। थोड़ी देर पहले की निराशा अब गायब थी। समापन सत्र में बड़े समूह में अनुभव साझा किये जा रहे थे।

यह दृश्य है दातासाईं कुटिया आश्रम में एक शैक्षिक भ्रमण के दौरान आयोजित खेल 'खजाने की खोज' का। इसमें 15-15 बच्चों के दो दल बनाकर दस चरणों में छिपाये गये खजाने को खोजना होता था। एक से नौ तक प्रत्येक चरण में एक पर्ची मिलती थी जिस पर अगले चरण या स्थान तक पहुँचने का संकेत होता था। जो पहेली, कोई कविता-गीत, लोकोक्ति या मुहावरा, चित्र एवं एक दो कूटरचित वाक्यों में होता था। पर्ची पढ़कर उसके अर्थ निकालते हुए शीघ्रता से नौ चरण पूरा कर खजाने तक पहले पहुँचने वाला दल विजयी होता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि अपने स्कूली दिनों में प्रत्येक वर्ष लगभग दो बार शैक्षिक भ्रमण करवाया जाता था, जिसे 'वन विहार' कहा जाता था। शैक्षिक भ्रमण के दौरान हम बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते, साथ में ही नाश्ता-भोजन करते, गीत गाते और वहाँ उपलब्ध पेड़-पौधों, जानवर, नदी-तालाब तितली, भँवरे, चिड़ियाँ आदि के बारे में जानते-सीखते। ऐसे ही एक भ्रमण में मोर-मोरनी को पहली बार बिल्कुल करीब अपने पास दाना चुगते हुए, नाचते हुए देखा था। वहाँ मिले मोर के पंखों के रंगों को पहली बार छूकर अनुभव किया। बाद के बहुत वर्षों तक उस मोर पंख के टुकड़े हम कुछ बच्चों की किताबों में दबे रहे। मैं ब्रह्म विज्ञान शिशु सदन का विद्यार्थी था जहाँ कक्षा 1 से 8 तक के बच्चे पढ़ते थे। तब शिक्षिकाएँ नहीं होती थीं। शिक्षक थे, जिन्हें बच्चे आचार्य जी बोला करते थे। स्कूल से एक शैक्षिक भ्रमण दातासाईं कुटिया में नवंबर महीने में पैदल और दूसरा मार्च महीने में चित्रकूट या कालिंजर के किले हेतु बस से जाया करता था। दातासाईं की कुटिया स्कूल से लगभग तीन किलोमीटर दूर थी। हमारे आचार्य गण जब शैक्षिक भ्रमण की सूचना देते तो हमारा उत्साह बल्लियों उछलने लगता। खजाने की खोज सभी बच्चों को बहुत भाता था। इस खेल में दो दल बनाये जाते जिसमें बच्चे अपना दलनायक चुनते। दोनों दल के साथ एक-एक शिक्षक होते थे पर वे केवल सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए ही थे। इसमें खजाने की खोजकर खजाना प्राप्त कर आपस में बँटवारा करना होता था। आरम्भ में दोनों दलों को एक-एक पर्ची दी जाती जिसमें आगे बढ़ने का सूत्र संकेत होता। उस क्षेत्र में निश्चित दूरियों पर आठ-दस जगह खजाने तक पहुँचने हेतु कुछ संकेत सूत्र लिखी पर्चियाँ रखी होती थीं। एक पर्ची प्राप्त करने के बाद दूसरे स्थान की पर्ची तक पहुँचने का संकेत मिलता था। पूरा खेल लगभग डेढ़-दो घंटे में पूरा होता। पल-पल रहस्य रोमांच, उत्सुकता, खुशी, हार-जीत, आशा-निराशा के भाव आते जाते। दूसरे दल पर भी नज़र रखनी पड़ती कि वह किस चरण में हैं। अंतिम पर्ची में खज़ाने का पता लिखा होता। खजाना मिलने पर उच्च स्वर में 'भारत माता

की जय' का जयघोष किया जाता ताकि दूसरा दल और सभी बच्चे समझ जायें कि पहले वाले दल ने विजयश्री प्राप्त कर ली है और वे अपना खोज अभियान बंद कर स्कूल ध्वज के पास एकत्र हो जायें। हारने वाला दल थोड़ी देर के लिए निराश जरूर होता पर अगले ही पल किसी दूसरे खेल या गतिविधि में लग उत्साह से भर जाते। ऐसे ही कबड्डी, खो-खो, शेर-बकरी, विष-अमृत, आम-नींबू-संतरा, नेता खोज और वालीबाल खेल खूब तालियाँ बटोरते। दोपहर का भोजन सभी साथ करते। घरों से लाये गये टिफिन से थोड़ा अंश निकाल कर एक परात में एकत्र किया जाता और जो बच्चे भोजन नहीं लाये होते उन्हें और विद्यालय के कर्मचारियों-आचार्यों को उससे भोजन परोसा जाता। चित्रकूट भ्रमण पर भोजन वहीं सभी के सहयोग से बनाया जाता। विद्यालय के संसाधन सीमित थे तो शैक्षिक भ्रमण के आयोजन के लिए प्रत्येक बच्चे से शुल्क भी लिया जाता जो उस समय दो से दस रुपये तक हुआ करता था। शैक्षिक भ्रमण पर जाने के दिन की पूर्व रात हम बच्चों की आँखों से नींद गायब रहती। भोर होते ही हम नहा धोकर विद्यालय की यूनिफॉर्म पहन भोजन का टिफिन ले स्कूल की ओर निकल भागते। कोशिश रहती कि विद्यालय पहुँचने वाला पहला बच्चा होऊँ। पर वहाँ पहले से ही बच्चे और उनके अभिभावक होते। पूरे परिसर में एक अनकहा उल्लास छाया रहता। विद्यालय के रिक्शे में चूने की बोरी, बाल्टियाँ, दरियाँ, नाश्ते के लिए लिये गये सामान से भरे गत्ते रखे जाते और कभी-कभी एक ट्रैक्टर में भोजन बनाने के लिए जरूरी बर्तन, आटा, सब्जी, घी, मसाले और ईंधन के रूप में लकड़ी-कंडे भी इकट्ठा किया जाता। एक रिक्शे पर किराए पर लिया हुआ लाउडस्पीकर बाँधा जाता और दो पंक्तियों में बच्चों को खड़ा कर सामने बैनर पकड़कर गीत गाते हुए और कुछ नारे बोलते हुए हम बच्चे उत्साह के साथ अपनी यात्रा शुरू करते। मुझे अच्छी तरह याद है तीन किलोमीटर की दूरी कब पूरी हो गई पता ही नहीं चलता। बाबा की कुटी बहुत रमणीक स्थान था, जहाँ फलदार वृक्षों, फूलों की क्यारियाँ एवं तमाम तरह की चिड़ियों का बसेरा था। बगल से बरसाती नाले में निर्मल जल कल-कल करता संगीत सुनाता रहता। कुछ बच्चे शिक्षकों की नजरें बचाकर पेड़ों पर चढ़ जाते तो कुछ साहसी बच्चे नाले में उतर नहा भी लेते। बहुत बाद में समझ में आया कि कोई भी गतिविधि शिक्षकों की दृष्टि से ओझल न थी। वे शायद प्रकृति के साथ जीने, स्वयं कुछ नया सीखने के लिए हम बच्चों को आज़ादी एवं अवसर दे रहे थे।

यह लिखते हुए मैं अपने बचपन के शैक्षिक भ्रमण तीन सालों के उन पलों को अपनी आँखों के सामने उपस्थित हुआ देख रहा हूँ। ये शैक्षिक भ्रमण केवल घूमना और मनोरंजन भर नहीं थे बल्कि प्रकृति की विशालता पर ज्ञान निर्माण के हमारे अनुभवों का अंकन ही थे। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है एक संवेदनशील, प्रकृति मित्र, मानवीय चेतना एवं समता-ममता युक्त मेरे व्यक्तित्व के बेहतर निर्माण में उन शैक्षिक भ्रमणों के

आयोजनों का व्यापक प्रभाव रहा है। देखा जाये तो शैक्षिक भ्रमण मानवीय मूल्यों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चे नेतृत्व, लोकतांत्रिकता, सामूहिकता, परस्पर सहयोग एवं विश्वास, प्रेम, सद्भाव, सहिष्णुता, निर्भयता के भाव भ्रमण के दौरान सीखते हैं। शैक्षिक भ्रमण बच्चों के अंदर कार्य योजना, समीक्षा, कल्पना, क्रियान्वयन एवं प्रबंधन के गुण भी विकसित करता है। एक दूसरे की मदद करते हुए लक्ष्य तक पहुँचना और सुख-दुख को समान रूप से साझा करना भी सीखते हैं। एक शिक्षक के रूप में मैं शैक्षिक भ्रमण को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक सशक्त माध्यम मानता हूँ। क्योंकि यह विषयवस्तु को रटाने की पद्धति से मुक्ति देकर प्रत्यक्ष सीखने को बढ़ावा देता है।

वास्तव में शैक्षिक भ्रमण ज्ञान सर्जना का पुरातन फलक है तो नित नवल विधा सीखने की अधुनातन ललक भी। हास, परिहास, उमंग, उत्साह का सरस निर्झर है तो लेखन, अभिव्यक्ति, संवाद कौशल का बौद्धिक विस्तार भी। शैक्षिक भ्रमण जीवन का वह पृष्ठ है जिस पर बच्चे अपने मनोभाव अनुभव की स्याही से दर्ज करते हैं। कक्षा कक्ष की दीवार की खिड़की से भीतर आती रचनात्मकता की मलय बयार है। शैक्षिक भ्रमण में बच्चे प्रकृति के मनमोहक आंगन में स्वयं करके सीखते हैं, एक-दूसरे से मिलकर कुछ नया रचते, गुनते और बुनते हैं जो उनके भावी जीवन पथ में सर्वदा सुवासित सुमनों की तरह खिले रहते हैं और इस सीखने के आधार में वहाँ कोई दबाव या बोझ नहीं होता बल्कि खुशी, प्रसन्नता आनंद के उल्लास उमंग में बच्चे किसी पहाड़ी झरने की तरह कर्म करते हुए मुक्त प्राकृतिक परिवेश में उपलब्ध प्रकृति के उपहारों का न केवल आनंद लेते हैं बल्कि अवलोकन, अनुमान, तर्क, कल्पना, तुलना और संबंध विवेचन करते हुए नवल ज्ञान की सर्जना की ओर उन्मुख होते हैं। वास्तव में शैक्षिक भ्रमण कक्षा या विद्यालय को बाहरी दुनिया से जोड़ता है और यह बाहरी दुनिया वह दुनिया है जहाँ बच्चे पहुँचकर जिज्ञासा के पंख लगा कर अनंत आकाश में उड़ जाना चाहते हैं। शैक्षिक भ्रमण न केवल बच्चों की मानसिक क्षुधा पूर्ति करता है बल्कि आगे बढ़ने के तमाम रास्ते भी खोलता है।

लेखक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं शैक्षिक संवाद मंच उत्तर-प्रदेश के संस्थापक हैं और विद्यालयों को आनन्दघर बनाने के अभियान पर काम कर रहे हैं। बाँदा, (उप्र)

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियों व प्यारे बच्चो, लीजिए प्रस्तुत है खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई विज्ञान गतिविधियाँ। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कक्षा कक्ष गतिविधियों के अंतर्गत करवाई गईं। इन गतिविधियों में विद्यार्थी बहुत शौक से शामिल हुए। विज्ञान, गतिविधियों से परिपूर्ण विषय है। गतिविधियाँ विषय-वस्तु को समझने में आसानी करती है। गतिविधियों के माध्यम से सीखा गया पाठ विद्यार्थियों के जेहन में लंबे समय तक बना रहता है। इन गतिविधियों को करने के बाद विद्यार्थी स्वप्रेरणा से पाठ को पढ़ते हुए उसमें शामिल गतिविधियाँ करने का प्रयास भी करता है फिर उसे विज्ञान विषय पढ़ने में आनंद आता है।

1. कप नीचे गिरेगा या नही?

इस गतिविधि के शीर्षक से ही पता लगता है कि यह गतिविधि मनोरंजन से भरी हुई है और भौतिकी की बहुत सी मजेदार गतिविधियों में से एक है। इस गतिविधि को करने के लिए सारे सामान की व्यवस्था विद्यार्थियों ने स्वयं की और बार-बार दोहरा कर धागे की उचित पैमाइश भी निकाली। उन्होंने इस गतिविधि को एकदम से उत्तम बनाया। एक कप लेते हैं वह कप धातु का या चीनी मिट्टी का हो सकता है। एक तीलियों से भरी हुई माचिस ली। दो मीटर सूती धागा लिया। धागे के दोनों सिरों में से एक तरफ कप और दूसरी तरफ माचिस को बाँध दिया। कप वाले सिरे को एक पेन के सहारे से नीचे लटका दिया। दूसरे हाथ दूसरे सिरे पर बँधी माचिस को उँगलियों से पकड़ कर नीचे लटका दिया। जैसे ही माचिस को छोड़ते हैं तो कप, माचिस से भारी होने के कारण पेन के ऊपर से फिसलता हुआ नीचे जाता है और माचिस भी तेज गति से कप की तरफ बढ़ती है। अचानक वह माचिस घूमने लग जाती है और माचिस का धागा पैन पर लिपट जाता है जिससे कप नीचे नहीं गिरता है। कप गुरुत्व बल के कारण नीचे जाता है व माचिस भी गुरुत्व के कारण नीचे जाती है। धागा पेन पर फिसल रहा है यहाँ माचिस पर दोहरा बल दो क्रमशः दिशाओं में लगता है। इसी कारण माचिस की तरफ का धागा पेन पर लिपट जाता है। बहुत बार अभ्यास से बच्चों को यह गतिविधि करनी आ गयी व विद्यार्थी अन्ततः कामयाब हुए। बहुत से छात्र-छात्राओं ने यह गतिविधि बनना सीख कर अपने घर में छोटे भाई बहनों को भी करके दिखायी। इस गतिविधि का वीडियो भी बनाया गया।

2. रसोईघर के सामान से कार्बनडाइऑक्साइड गैस बनाओ-

विद्यालय में अक्सर जिक्र चलता है कि कार्बन डाइऑक्साइड गैस हानिकारक गैस है, इससे पर्यावरण को बहुत नुकसान होते हैं। विद्यार्थियों की यह इच्छा थी कि उन्हें कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनाकर दिखाई जाए या वह खुद भी कार्बन डाइऑक्साइड गैस कैसे बना सकते हैं? उनको रसोई घर से ही सामान एकत्र करके गैस बनाने की विधि व उसका परीक्षण करना भी सिखाया गया। इसलिए विद्यार्थियों को बताया गया कि मीठे सोडे (सोडियम बाईकार्बोनेट) या प्रतिअम्ल इनो के साथ नींबू के रस की अभिक्रिया कराने पर झाग के साथ कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनती है। नींबू के रस में साइट्रिक एसिड होता है, जो मीठा सोडा (सोडियम बाइकार्बोनेट) के साथ मिश्रित होने पर कार्बन डाइऑक्साइड और सोडियम साइट्रेट बनाने के लिए प्रतिक्रिया करता है । विद्यार्थियों ने यह गैस बनाई और माचिस की जलती तीली को इससे बुझा कर देखा और वह बहुत खुश हुए।

3. मोमबत्तियों के बुझने का कारण बताओ?

विद्यार्थियों की है इच्छा थी कि उन्हें रासायनिक पदार्थों के संयोग से भी कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनाकर दिखाई जाए। विद्यार्थियों को अब यह बताना बहुत जरूरी था कि कार्बन डाइऑक्साइड गैस वायु से भारी होती है और वह नीचे की सतह पर ही रहती है। इसके लिए सोडियम

बाई कार्बोनेट व एसिटिक एसिड दोनों रसायन विज्ञान कक्ष से लिये गये। एक बीकर में दो चम्मच सोडियम बाईकार्बोनेट लेकर उस पर 50 मिलीलीटर तनु एसिटिक एसिड (सिरका) डाला गया। जिससे कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनी। मेज पर जो चार जलती हुई मोमबत्तियाँ थी उनके पास बीकर को तिरछा करके मोमबत्तियों के पास लाया गया तो वह जलती मोमबत्तियाँ बुझ गईं। विद्यार्थियों के लिए बड़ा आश्चर्य का विषय था कि न तो पानी बहकर आया! ऐसी कौन सी चीज बहकर आई जिससे मोमबत्तियाँ बुझ गईं? तो उन्हें समझाया गया कि यहाँ अब कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनी है। कार्बन डाइऑक्साइड गैस हवा से भारी होती है इसलिए वह बनने के बाद बीकर में ही रही। जैसे ही बीकर को तिरछा किया गया गैस बाहर निकली और उससे मोमबत्तियाँ बुझ गईं। विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही चमत्कृत कर देने वाली घटना थी। इस गतिविधि के साथ यह भी जोड़ कर बताया गया कि आग बुझाने वाले अग्निशामक यंत्रों में इसी प्रकार अम्ल और लवण की क्रिया कराकर कार्बन डाइऑक्साइड बनाई जाती है, जिससे आग लगने पर जलती वस्तुओं को बुझाया जाता है।

4. कार्ड को पकड़ कर दिखाओ।

कक्षा 10 में जीव विज्ञान में नियंत्रण एवं समन्वय बिंदु पढ़ाते समय यह जरूरी हो जाता है कि उनको एक खेल रूप में गतिविधि करके दिखाई जाए जिससे उन्हें यह पता चल सके कि किस प्रकार हमारी माँसपेशियों और मस्तिष्क, मेरू-रज्जु के बीच में समन्वय होता है और किस प्रकार हम पेशीय उत्तकों की क्रियाओं को नियंत्रित कर सकते हैं। इसके लिए एक विजिटिंग कार्ड लिया। सबसे पहले मैंने उस कार्ड को अपने आप छोड़ा वह अपने दूसरे हाथ की उँगलियों से उसको पकड़ लिया। यही गतिविधि मैंने किसी अन्य के साथ करने के लिए एक विद्यार्थी को बुलाया। उससे कहा गया कि जब मैं कार्ड छोड़ूँगा तो तुमने इस कार्ड को अपनी दो उँगलियों से कैच करना है। विद्यार्थी ने कहा ठीक है जी। जैसी मैंने कार्ड छोड़ा विद्यार्थी उस कार्ड को पकड़ पाता, उसकी उंगलियों के बीच में से निकल कर नीचे गिर गया। ऐसा कई बार किया गया लेकिन एक बार भी वह विद्यार्थी कार्ड को कैच नहीं कर पाया। अन्य विद्यार्थियों ने भी यह कोशिश की, लेकिन वह भी नहीं पकड़ पाए। अब वह यह जानना चाहते थे कि ऐसा क्यों होता है? आप तो कार्ड को कैच कर लेते हो और हम नहीं कर पाते। तो उन्हें बताया गया कि जब मैं कार्ड को छोड़कर खुद कैच करता हूँ तो वहाँ एक ही तंत्र संदेश प्राप्त करने व अनुक्रिया का काम कर रहा है। लेकिन जब मैं कार्ड छोड़ता हूँ आपकी आँखें उस कार्ड को छोड़ने की क्रिया को देखती है फिर संदेश प्रसारित होता है तंत्रिका तंत्र जरिये उँगलियों की माँसपेशियों तक अनुदेश कार्ड को पकड़ो तक के आदान-प्रदान में ही कार्ड नीचे गिर जाता है। (विद्यार्थियों को यह गतिविधि बहुत ही सरल भाषा में समझाई गयी है।) अब विद्यार्थियों को आसानी से यह समझ आ गया कि मस्तिष्क किस प्रकार शारीरिक गतिविधियों/ क्रियाओं को नियंत्रित करता है।

5. सोचा गया नम्बर बताने का खेल-

विज्ञान कक्षा में एक कहावत सुनाई गई कि गणित सभी विज्ञानों की जननी है अर्थात कोई भी विज्ञान ऐसा नहीं है जिसमें गणित का महत्त्वपूर्ण योगदान न हो। असल में विद्यार्थी यह कहना चाह रहे थे कि आप कभी भी गणित की कोई गतिविधि नहीं कराते। मैंने कहा कोई बात नहीं इस बार हम वैज्ञानिक तरीके से गणित की गतिविधि करवाएँगे जिसमें अकों को जोड़ना सिखाया जाएगा। नंबरों को किस तरह से जोड़कर उनके युग्म बनाए जाते हैं और

किस प्रकार से उन्हें वितरित करके एक गणितीय खेल बन जाता है। जिससे हम उसके द्वारा अपने मन में सोचा नंबर बता सकते हैं। इसके लिए हमने 1, 2, 4, 8, 16 व 32 इन 6 नंबरों को चुना गया। इन नंबरों को 1, 2, 3, 4, 5 युग्मों के योग में लिखा व 6 कार्ड्स में बाँट दिया। इस प्रकार जो 6 कार्ड बनकर सामने आए (चित्र में दिया गया है)। अब किसी विद्यार्थी को कहा जाता है कि इन 6 कार्ड्स में से कोई भी एक नंबर चुनकर यह बताएँ कि किस-किस कार्ड में वह नंबर है जो उसने सोचा है। जिस जिस कार्ड में विद्यार्थी अपना सोचा वह नंबर बताता है उस कार्ड के प्रारंभिक नंबर जो 1, 2, 4, 8, 16 व 32 है का योग किया जाए तो उसके द्वारा सोचा के नंबर पता लग जाता है। इस गतिविधि को कक्षा सात की छात्रा गुलफ़सा ने प्रदर्शित किया। सभी बच्चों ने इसे नोट किया व अपने लिए बनाया। उन्होंने घर में जाकर इस गणितीय खेल को किया। जिससे उनकी अंकों के जोड़ करने की क्षमता में वृद्धि हुई व गणितीय खेल का मज़ा आया अलग से।

6. विज्ञान-गणित प्रदर्शनी व विद्यार्थियों का उत्साह-

दिसंबर महीने में प्रदेश भर में विज्ञान व गणित मॉडल प्रदर्शनियों की धूम रही। विद्यालय स्तर व कलस्टर स्तर पर इन प्रदर्शनियों में विद्यार्थियों ने अपने हुनर का प्रदर्शन किया। इनमें भाग लेने मात्र से विद्यार्थियों में उपजी विषय नीरसता व प्रायोगिक खालीपन का उपचार हो पाया। विद्यार्थियों को अपने नवाचार व रचनात्मक विचारों को प्रदर्शित करने के लिए मंच मिला। इन प्रदर्शनियों का होना उनके लिए एक अवसर के रूप में पेश आया। विद्यालय की ऐसी ही प्रत्येक गतिविधि विद्यार्थियों की उन्नति में सहायक होती है। विद्यार्थियों का उत्साह देखने को बनता था जैसे कि उनका कोई सपना साकार हो गया हो। अच्छा, ठीक है, अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो, अगले अंक में फिर मिलते हैं नई-नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

ईएसएचएम सह विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, खंड जगाधरी
जिला यमुनानगर, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

विज्ञान से जुड़ी कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

1. - माँसपेशियों में किस अम्ल के एकत्रित होने से थकावट आती है ?
उत्तर- लैक्टिक अम्ल
2. - अंगूर में कौन-सा अम्ल पाया जाता है?
उत्तर- टार्टरिक अम्ल
3. - कैंसर सम्बन्धी रोगों का अध्ययन कहलाता है
उत्तर- ऑरगेनोलॉजी
4. - मानव शरीर में सबसे लम्बी कोशिका कौन-सी होती है?
उत्तर- तंत्रिका कोशिका
5. - दाँत मुख्य रूप से किस पदार्थ के बने होते हैं?
उत्तर- डेंटीन के
6. - किस जंतु की आकृति पैर की चप्पल के समान होती है?
उत्तर- पैरामीशियम
7. - केंचुए की कितनी आँखें होती हैं?
उत्तर- एक भी नहीं
8. - गाजर किस विटामिन का समृद्ध स्रोत है?
उत्तर- विटामिन-ए
9. - किण्वन का उदाहरण क्या है?
उत्तर- -दूध का खट्टा होना, खाने की ब्रेड का बनना, गीले आटे का खट्टा होना आदि
10. - मानव का मस्तिष्क लगभग कितने ग्राम का होता है?
उत्तर- 1350
11. - रक्त में पायी जाने वाली कौन सी धातु है?
उत्तर- लोहा

संदीप वधवा
मौलिक मुख्य अध्यापक
रावमा विद्यालय,पैंतावास कलां, चरखी दादरी, हरियाणा

पहेलियाँ

1 फ्राँस देश के इक अन्वेषक,
पढ़ने लिखने की युक्ति बनाई।
दृष्टिहीनों का वह बना मसीहा,
पूरे विश्व में धूम मचाई ।

2 एक अभिनेत्री ऐसी है,
जिसने अपना पैर गँवाया।
फिर भी नाच कर शोहरत पाई,
पूरे विश्व मे नाम कमाया ।

3 गीत लिखे, संगीत के मुखिया,
और वे गाते गान।
आँख से वे देख ना पाते,
फ़िल्म जगत की शान ।

4 एक हाथ से तैरे बच्चो,
दुनिया में नाम खूब कमाया।
हाथ एक उनका खराब है,
सम्मान बहुत उन्होंने पाया।

उत्तर- 1 लुई ब्रेल, 2 सुधा चंद्रन 3. रविन्द्र जैन 4. शरत गायकवाड़

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उमा विद्यालय, लहार
जिला-भिंड, मप्र

एकता की ताकत

एक बहेलिया जंगल में पक्षियों को पकड़ने के लिए गया और पक्षियों को पकड़ने के लिए अपने जाल फैलाकर उसपर चावल के दाने बिखेर कर जंगल की झाड़ियो में छुप गया। इतने में झुण्ड में जाते हुए कबूतरों को जंगल में चावल के दाने दिखे तो उन सभी के मुँह में पानी भर आया। चावल के दाने चुगने के लिए सभी नीचे उतरे तो उनमें मौजूद एक बुद्धिमान कबूतर को कुछ शक हुआ कि भला जंगल में ऐसे चावल के दाने कहाँ से आ गये। हो न हो इसमें कोई धोखा हो सकता है। उसके मना करने के बावजूद सभी कबूतर दाना चुगने लगे और इस तरह सभी कबूतर शिकारी द्वारा फैलाये जाल में फँस गये। सभी उड़ने की कोशिश करने लगे। लेकिन वे सभी असफल रहे।

बुद्धिमान कबूतर बोला- दोस्तो! अगर हम सभी एक साथ पूरे शक्ति लगाकर उड़े तो निश्चित ही हम सभी इस जाल को लेकर उड़ सकते है। इसके बाद उन कबूतरों ने एक साथ पूरे ताकत से उड़ने लगे जिससे वे फँसे हुए जाल को लेकर उड़ने लगे। लेकिन पास में छिपा बहेलिया भी उनके पीछे दौड़ा। कबूतरों की एकता की शक्ति के पीछे वह असफल रहा और उन कबूतरों को पकड़ नहीं पाया। फिर उन कबूतरों ने अपने मित्र चूहे के पास पहुँचकर जाल कटवाया और आज़ाद हो गए। इस प्रकार उनकी एकता की ताकत ने उन्हें बहेलिया की कैद से बचा लिया।

-पंचतंत्र से

ठंडे-ठंडे पानी से नहाना चाहिए

हमारे देश की संस्कृति सबसे सुंदर होने के साथ साथ वैज्ञानिक सोच पर भी आधारित है। हमारे देश में नदियों के ठंडे पानी मे नहाने की प्रथा प्रचलित है। हम गंगा के पानी को अमृत मानते हैं। वास्तव में जब हम नहाते हैं तो हम अपने शरीर पर लगे धूल मिट्टी व कीटाणुओं को हटा देते हैं। एक तो फायदा ये हुआ कि हमारा शरीर साफ हो गया। दूसरा जो फायदा है वो है ठंडे पानी का। जब हम ठंडे पानी से नहाते हैं तो हमारे शरीर का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस से नीचे गिर जाता है जिसे वापिस 37 डिग्री करने के लिए हमारे सभी अंग स्फूर्ति से काम पर लग जाते हैं और हम अपने आप को तरोताज़ा पाते हैं। आजकल बहुत से लोग सर्दियों में गर्म पानी से नहाते हैं। इससे शरीर से धूल मिट्टी व कीटाणु तो हट जाते हैं, पर हमारी सेहत के लिए ठीक नहीं है। हमें सदा ऐसे पानी से नहाना चाहिए जिस पानी का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस से कम हो, जिससे हमारे अंगों में स्फूर्ति आये।

सुनील अरोरा
पीजीटी रसायन विज्ञान
सार्थक स्कूल, सेक्टर 12-ए
पंचकूला, हरियाणा

हिन्दी के राजा

होंगे तुम अंग्रेज़ी के किंग, हम तो हिन्दी के ही राजा हैं।
तुम पिओ मिल्क, पर हम पीते दूध ताज़ा हैं।
तुम पिओ कोल्ड वाटर, हम पीते पानी ताज़ा हैं।
तुम करो डिनर लंच, हम तो करते भोजन ताज़ा हैं।
होंगे तुम अंग्रेज़ी के किंग, हम तो हिन्दी के ही राजा हैं।

तुम खाओ रैडिश, कैरेट, हम तो मूली, गाजर खाते हैं।
तुम खाओ टरनिप, पम्पकीन, हम तो शलजम, कद्दू खाते हैं।
तुम खाओ एप्पल, मैंगो, हमको सेब, आम भाता है।
होंगे तुम अंग्रेज़ी के किंग, हम तो हिन्दी के ही राजा हैं।

तुम खाओ वाटरमेलन, हम तो खाते तरबूज ताज़ा हैं।
तुम खाओ ओरेंज, पपाया, हम तो संतरा, पपीता खाते हैं।
होंगे तुम अंग्रेजी के किंग, हम तो हिन्दी के ही राजा हैं।
तुम खाओ ग्रेप्स, गवावा, हम तो अंगूर, अमरुद खाते ताजा हैं।
होंगे तुम अंग्रेजी के किंग, हम तो हिन्दी के ही राजा हैं।

दिनेश सुतवाल
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय मॉडल सस्कृति प्राथमिक पाठशाला, बैंसी
जिला-रोहतक, हरियाणा

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा को 'सुशासन पुरस्कार'

सुभाष शर्मा

25 दिसम्बर को भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती देश भर में सुशासन दिवस के तौर पर मनाई जाती है। देश में सुशासन की स्थापना में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का अमूल्य योगदान रहा है। उनके इस अमूल्य योगदान से देशवासियों को जोड़ने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2014 से 25 दिसंबर का दिन सुशासन दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी।

सुशासन व्यवस्था का एक वह रूप है, जिसका किसी सामाजिक राजनीतिक प्रशासनिक इकाई को इस प्रकार चलाने की व्यवस्था से है, जिससे किआम जनता को सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं का लाभ मिल सके। सुशासन का अर्थ है- न्याय पर आधारित शासन के दुरुपयोग, घोटाले, भ्रष्टाचार और सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए निदान। सुशासन का एकमात्र उद्देश्य लोगों का कल्याण करना है तथा जनता का सर्वांगीण विकास करना है और लोगों को प्रशासन में विश्वास दिलाना है।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए सुशासन दिवस का हर वर्ष एक थीम रखा जाता है। वर्ष 2021 में केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रशासन **गाँव की ओर** थीम पर सुशासन सप्ताह अभियान की शुरुआत की। वही हरियाणा में 2021 का सुशासन-दिवस सुशासन परिणाम वर्ष के रूप में मनाया गया।

2021 के सुशासन-दिवस के अवसर पर हरियाणा के 80 से ज्यादा प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों को स्टेट सुपर अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में हरियाणा शिक्षा विभाग को भी दो पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सुपर-100 के तहत नीट एवं आईआईटी जेईई के विद्यार्थियों के चयन पर सुपर-100 की पूरी प्रशासनिक टीम को मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। दूसरा नूंह जिले द्वारा जीरो ड्रॉपआउट करके बालिका शिक्षा में सुधार करने को लेकर जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी डॉ. अब्दुल रहमान खान इस कार्यक्रम को रूपरेखा से लेकर पूर्णता तक ले जाने वाली पीजीटी केमिस्ट्री की शिक्षिका कुसुम मलिक, डॉ. पवन लेक्चरर, जीवविज्ञान को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

सुपर 100 सरकार की एक ऐसी कल्याणकारी योजना है जिसके तहत हरियाणा में गरीब परिवार के प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ अपनी प्रतिभा के बल पर आईआईटी जेईई एडवांस परीक्षा नीट जैसे परीक्षा में चयन प्राप्त कर पा रहे हैं। सुपर-100 प्रोग्राम के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत आईआईटी जेईई एडवांस परीक्षा 2021 में हरियाणा के 29 विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है, जिससे इस कार्यक्रम को चलाने वाले प्रशासनिक अधिकारियों का मनोबल भी बड़ा है। हरियाणा के मुख्यमंत्री की भी यही सोच है कि हरियाणा में गरीब परिवार का कोई भी प्रतिभावान छात्र अपने सपनों को पूरा करने में आर्थिक सुविधा के अभाव में कहीं पीछे न रह जाए। इसलिए हरियाणा सरकार द्वारा वर्ष 2018 में सुपर-30 की तर्ज पर सुपर-100 योजना शुरू की गई थी। इस योजना के तहत हरियाणा राज्य के सरकारी विद्यालय में 10वीं की बोर्ड परीक्षा में 80% से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को जेईई, नीट की तैयारी निःशुल्क करवाने की व्यवस्था की गई है। रेवाड़ी में विकल्प फाउंडेशन तथा पंचकूला में ऐस ट्यूटोरियल,चंडीगढ़ तथा एलन कैरियर इंस्टिट्यूट पंचकूला के साथ मिलकर चलाए गए इस कार्यक्रम में विभाग द्वारा बच्चों का जिला स्तर पर एक टेस्ट आयोजित किया जाता है। इस टेस्ट में सफल विद्यार्थियों को रेवाड़ी में विकल्प केंद्र में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है और उसके बाद दोबारा टेस्ट लिया जाता है। अंत में कक्षा दसवीं के अंकों, जिला स्तरीय टेस्ट के अंकों तथा पाँच दिवसीय प्रशिक्षण उपरांत प्राप्त अंकों की मेरिट तैयार की जाती है। जिसके आधार पर मेडिकल पर नॉन मेडिकल के प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थियों का चुनाव किया जाता है। चुने हुए विद्यार्थियों को रेवाड़ी तथा पंचकूला के छात्रावास में रखा जाता है। विकल्प फाउंडेशन तथा ऐस ट्यूटोरियल्स द्वारा इनकी कोचिंग का प्रबंध किया गया है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल मानते हैं कि सुपर-100 राज्य के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए प्रदेश सरकार की एक अभिनव पहल है। यह मेधावी छात्रों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

वहीं हरियाणा के शिक्षा मंत्री की भी यही सोच है कि सुपर-100 कार्यक्रम साधारण परिवारों के मेधावी बच्चों के जीवन में एक नया सवेरा लेकर आया है। इससे बहुत

से बच्चों को जिन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह आईआईटी-नीट में प्रवेश पा सकते हैं, उसे हरियाणा सरकार ने पूरा करने का अवसर दिया और छात्र-छात्राओं ने उसे करके दिखाया है।

सुशासन की एक नई पहल जिसकी सोच पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की रही- गरीब व अंत्योदय तक सरकार की योजना पहुँचे। सुपर-100 उसी की एक मिसाल है। यह एक योजना नहीं बल्कि कई आँखों के स्वप्न को साकार करने की अनूठी पहल है, जिसके लिए हरियाणा सरकार के हरियाणा शिक्षा विभाग की जितनी पीठ थपथपाई जाए, कम है। अतिरिक्त निदेशक डॉ. अमृता सिंह, सहायक निदेशक नंदकिशोर वर्मा, सहायक निदेशक कुलदीप सिंह, कार्यक्रम अधिकारी संजय कुमार इन सभी प्रशासनिक अधिकारियों के साथ-साथ राजकीय विद्यालय के उन सभी शिक्षकों को भी यह पुरस्कार सम्मानित करता है जिन सब की अनथक मेहनत की बदौलत हरियाणा के मेधावी छात्रों ने आईआईटी जेईई 2021 क्वालीफाई किया है। सुपर-100 मेधावी छात्रों के अभिभावकों के लिए ही नहीं बल्कि उस गाँव, उस गली-कूचे, नुक्कड़ के लिए भी एक नई रोशनी लेकर आया है, यहाँ कभी चाँद को निहार कर या शायद कभी सोते हुए उस सच्चाई को देखने की एक ललक पैदा हुई हो। यह योजना हरियाणा की भावी पीढ़ी के लिए भी नई उमंग, नई रोशनी लेकर आ रही है, जो बुलंदियों को छूना चाहते हैं।

दूसरी तरफ देश के पिछड़े जिलों में शुमार हरियाणा का नूंह जिला है, जहाँ बहुत सी बालिकाएँ शिक्षा या तो रूढ़िवादी प्रथाओं के चलते प्राप्त ही नहीं कर सकीं और कुछ स्कूल में कुछ कक्षाएँ पढ़ने के पश्चात स्कूल छोड़ जाती थीं, ऐसे में जिले का ड्रॉप-आउट काफी अधिक था। इस जिले में जीरो ड्रॉप-आउट की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती थी। परंतु कहते हैं -मंजिल मजबूर हो मिलने को आपसे, कोशिश इतनी शिद्दत से करिए, को जिला शिक्षा विभाग, नूंह की टीम ने जीरो ड्रॉपआउट करके दिखाया। जीरो ड्रॉपआउट करने के लिए जिला प्रशासन सदैव प्रयासरत रहा, परन्तु प्रशासन की इस सोच को पूरा करने में जिस शख्सियत ने सबसे ज्यादा योगदान दिया- वह है, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फिरोजपुर झिरका, नूंह की पीजीटी केमेस्ट्री की शिक्षिका कुसुम मलिक, जिन्होंने शिक्षा विभाग की इस सोच को पूरा करने का बीड़ा उठाया। लेक्चरर कुसुम मलिक ने जिला प्रशासन तथा जिला शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों जिनमें जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी डॉ अब्दुल रहमान खान तथा डॉ पवन यादव लेक्चरर, जीव विज्ञान के सहयोग से शिक्षा से वंचित रह रही बालिकाओं को शिक्षा से जोड़कर स्कूल की दहलीज तक लाने का काम कर दिखाया।

गौरतलब है कि नूंह जिले ने सबसे कम लड़कियों और महिला सशक्तीकरण संकेतक जैसे साक्षरता दर और स्कूल नामांकन दर (महिला साक्षरता 36.6% और

मुस्लिम लड़कियों के लिए ड्रॉपआउट दर 39.62%) को दिखाया है। कोरोना महामारी ने जिले में बालिका शिक्षा की स्थिति को और खराब कर दिया। ये आँकड़े एक शिक्षक के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती रहे, इसलिए इस क्षेत्र में लड़कियों की शिक्षा के उत्थान के लिए काम करने की दृष्टि से लड़कियों के ड्रॉपआउट अनुपात के बारे में दो साल का रोड-मैप बनाने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ परामर्श किया और कक्षाओं, स्कूलों और बड़े समुदाय के भीतर लैंगिक रूढ़िवादिता को चुनौती देने पर ध्यान केंद्रित किया। लिंग, समानता और लड़कियों की सुरक्षा और सुरक्षा की अवधारणाओं पर माता-पिता और समुदाय की जागरूकता के निर्माण के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण का उपयोग किया गया। फिरोजपुर झिरका ब्लॉक के कुछ अन्य स्कूल शिक्षकों को अगली कक्षा में नामांकन और उनकी कक्षाओं में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों से लैस करने के लिए प्रशिक्षित किया। खंड के विभिन्न गाँवों के शिक्षकों और चयनित स्व-प्रेरित युवाओं के बीच चिंतनशील दृष्टिकोण, नेतृत्व कौशल और लचीलापन बनाने के लिए व्यवस्थित प्रशिक्षण और चर्चा का आयोजन किया। कोरोना महामारी से पहले इन कौशलों का उपयोग अगली कक्षा में लड़कियों के नामांकन में सुधार के लिए प्रत्येक गाँव में छोटे समूह की बैठक आयोजित करके, माता-पिता की बातचीत और परामर्श, जागरूकता रैलियों, नुक्कड़ नाटक, परिवार के साथ परिवार के सदस्य के रूप में भागीदारी दिखाने के लिए किया। एनसीसी इकाई की स्थापना, विज्ञान संकाय शुरू करना, विभिन्न स्तरों पर लड़कियों की भागीदारी और बालिका नेतृत्व, लैंगिक समानता, कार्मिक स्वच्छता, ग्रीन स्कूल के क्षेत्र में की गई पहल, लड़कियों को उनके जीवन में शिक्षा के मूल्य की ओर प्रेरित कर रही है। महामारी कोविड-19 की शुरुआत के तुरंत बाद, जब सभी स्कूलों और शिक्षण संस्थानों को अनिश्चित अवधि के लिए बंद कर दिया गया था, तो बालिका मंच ने (स्कूल स्तर की लड़कियों के क्लब), युवा टीमों की लड़कियों के समर्थन से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समुदाय के बीच कोविड-19 पर जागरूकता पैदा करने के लिए कुछ गैर सरकारी संगठनों ने भी सहयोग किया। स्कूल के फिर से खुलने और सीखने की हानि की अनिश्चितता को ध्यान में रखते हुए, विशेष रूप से लड़कियाँ अनुभव कर रही थीं क्योंकि राज्य सरकार द्वारा दी गई ऑनलाइन शिक्षा समुदाय तक नहीं पहुँच रही थी, मोहल्ला पाठशाला (सामुदायिक शिक्षा केंद्र) के विचार की अवधारणा को साकार रूप दिया। जिसने जीरो ड्रॉपआउट मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी प्रमुख भूमिका निभाई। इस मॉडल की सराहना की गई और बाद में पूरे जिले में जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा बच्चों के लिए शिक्षण सीखने को सार्थक बनाने के लिए इसे बढ़ाया गया। स्कूल और छात्राओं के बीच सेतु के रूप में एक क्रांतिकारी मील के पत्थर के रूप में कामयाबी मिली।

प्रवक्ता अंग्रेजी
रावमा विद्यालय, ललहाड़ी कलां
जिला-यमुनानगर, हरियाणा

मंत्रमुग्ध करती है छात्रा तन्नू की जादुई आवाज़

प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती। मेहनत, निष्ठा, लग्न, निरंतरता ये वे उपकरण हैं जिनके सहारे वह अपनी मंजिल तक पहुँच कर ही दम लेती है। यह अवश्य है कि थोड़ी देर हो सकती है। पर, अंततः परिणाम आपको अवश्य मिलता है। ऐसी ही निष्ठा और लग्न का जीवंत उदाहरण है हमारे स्कूल राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कथूरा की छात्रा तन्नू। ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी सुर ताल से खुद को साधती तन्नू के कंठ पर माँ सरस्वती का वास स्पष्ट परिलक्षित होता है। बचपन से ही गायन में रुचि होने के कारण वह स्कूल में होने वाली बालसभा में गाती और विशेष ताली बटोरती। ये तालियाँ उसके उत्साह का वर्धन करतीं। सुमधुर आवाज़ की धनी तन्नू से मेरा परिचय 2016 में हुआ। स्कूल में वार्षिकोत्सव की तैयारी के दौरान तन्नू ने देशभक्ति की भावना से भरा हुआ एक गीत गाया। उस समय वह सातवीं कक्षा में थी। उसकी गायन-शैली में आवाज़ के उतार चढ़ाव, सुर-ताल का ऐसा संगम देखने को मिला कि मैं तो मंत्रमुग्ध हो गई। संगीत की बारीकियों से तो मैं परिचित नहीं थी, पर इस बच्ची की प्रतिभा से तो मैं बेहद प्रभावित हुई कि बिना ढोलक, मंजीरा, हारमोनियम सिर्फ आवाज़ के आरोह-अवरोह से लबरेज गजब का गीत गाया बच्ची ने। वार्षिकोत्सव के बाद सब बच्चे अपने-अपने अध्ययन क्षेत्र में जुट गए। हम भी तयशुदा विभिन्न और क्रियाकलापों में व्यस्त हो गए।

कई बार जीवन में मौन टूटता है तो कुछ रचनात्मकता आती है। ऐसा ही हमारे साथ भी हुआ। पुस्तकें, पाठ्यक्रम, पठन-पाठन का यह सिलसिला टूटता है जब विद्यालय में कला-उत्सव के आयोजन का पत्र प्राप्त हुआ। वास्तव में भारतीय संस्कृति की अद्भुत विशेषता है कि वहाँ ऋतुएँ त्यौहारों का निमंत्रण लाती हैं। और यही निमंत्रण हमें भी मिला था कि विद्यार्थियों को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी संस्कृति से परिचित कराया जाए। क्योंकि आपाधापी भरे युग में त्यौहार अपनी प्रासंगिकता खोने लगे थे। हम सब विदेशी संस्कृति को उनके त्यौहारों को तो अपनाने लगे थे पर खुद की पहचान भूलने लगे थे। ऐसे घटाटोप समय में सरकार ने एक प्रशंसनीय पहल की। सरकारी स्कूल अब तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों से लगभग वंचित थे। एक तरफ सुविधाओं का अभाव तो दूसरी तरफ किसी प्रकार का कोई मंच उपलब्ध नहीं था। जहाँ ग्रामीण परिवेश के बच्चे अपनी प्रतिभा को अभिव्यक्त कर सके। एक नीरस,

शुष्क और बंजर सी जमीन पर कोई नवीन निर्माण नहीं। ऐसे में सरकार द्वारा चलाए गए तीज-उत्सव, कला-उत्सव, कल्चर-फेस्ट, प्रतिभा-खोज, फाग-मेला, गीता-जयंती, हिंदी-पखवाड़ा आदि विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच दिया जहाँ वे रचनात्मकता से भरपूर कुछ रच सकें। इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास आया और साथ ही प्रतिस्पर्धा की भावना भी। ये सरकार की अनूठी पहल है। इन्हीं कार्यक्रमों के कारण ही विभिन्न छुपी हुई प्रतिभाएँ उभरकर सामने आईं। हमारे विद्यालय की छात्रा तन्नू इसका जीता-जागता उदाहरण है। मंजिल तक पहुँचने के लिए संघर्षो की एक लंबी दौड़ लगानी पड़ती है। तन्नू को भी अपने गायन के लिए मुसीबतें उठानी पड़ी। वित्त की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसका अभाव व्यक्ति के संघर्ष के घेरों को बढ़ा देता है। एक तो ग्रामीण परिवेश, धन का अभाव, साधनों की कमी और गायन का पेशा सारी ही परिस्थितियाँ तन्नू के विपरीत थी। ये केवल तन्नू ही नहीं बल्कि उस जैसी प्रतिभाओं का दम तोड़ देती हैं। अगर उनके भीतर कुछ गुजरने की तमन्ना नहीं होती। यहाँ मुझे कुछ पंक्तियाँ स्मरण हो आई हैं- **हवाओं ने लाख चाहा, मगर चिराग फिर भी आँधियों में जलते रहे।** तन्नू भी अडिग रही। खंड, जिला स्तर एवं अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में भी प्रत्येक यह अपनी प्रस्तुति देती है। स्वयं को दिन-प्रतिदिन निखारती तन्नू की बड़ी उपलब्धि रही। वर्ष 2021 में होने वाले कल्चर फेस्ट में रागिनी प्रतियोगिता में प्रदेश भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। खचाखच भरे पंडाल में अपनी आवाज़ से सबको सम्मोहित किया। चारों ओर तालियों की ही गड़गाहट नजर आ रही थी। मैं भी सम्मोहन की चपेट में थी और मन ही मन इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना कर रही थी।

राज्य स्तरीय इस प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाती तन्नू ने रागिनी प्रतियोगिता में प्रदेश भर में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपना, अपने माता-पिता, विद्यालय, जिले का नाम रोशन किया। आर्य समाज सम्मेलन में यह छात्रा ऋषि दयानंद के समाज को जागरूक करने वाले भजन गाती है। सबसे अच्छी बात है कि तन्नू के पिताजी उसके साथ साये की भांति अपना आशीर्वाद और देखरेख करते हैं। वे प्रत्येक कार्यक्रम में तन्नू के साथ आते जाते हैं और उसे प्रोत्साहित करते हैं। यह यात्रा बेहद मुश्किल भी है क्योंकि समाज इतनी आसानी से एक लड़की का मंच से रागिनी गायन स्वीकार नहीं करता। परंतु भीतर की जीवटता, और विश्वास से मंजिल तक पहुँचा जा सकता है। तन्नू के लय-सुर-ताल और अधिक निखरें। ईश्वर उसे और अधिक सुर बख्शे, यह प्रार्थना है।

सुशील कुमारी
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कथूरा
सोनीपत, हरियाणा

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अधीर न हों

अगर आप किसी भी कार्य को धैर्य के साथ करते हैं तो वह कार्य हमेशा सफल होता है। चाहे आप कितनी ही कठिनाइयों से घिरे हों, धैर्य और हिम्मत से हर कार्य सिद्ध किया जा सकता है। आज मानव जीवन के समक्ष कोरोना महामारी अपना विकराल रूप दिखा रही है। इस महामारी से पूरा विश्व जूझ रहा है। जिस प्रकार गिरगिट अपना स्वरूप बदलता है उसी प्रकार वर्तमान समय में यह महामारी पहली, दूसरी और अब तीसरी लहर के रूप में मनुष्य के धैर्य और हिम्मत की परीक्षा ले रही है। अभी महामारी की दूसरी लहर खत्म हुई ही नहीं कि तीसरी लहर मनुष्य के सामने चुनौती बनकर खड़ी है। इसमें कोई भी संशय नहीं है कि आज परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल नहीं हैं, मगर जो व्यक्ति परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने में असफल रह जाते हैं, वे हार जाते हैं। संत कबीर ने कहा है- 'जौं रोऊँ तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ। मनहीं माँहि बिसूरणां, ज्यूँ धुँण काठहिं खाइ' इसलिए हमारे अंदर परिस्थितियों व परिवेश के अनुकूल ढ़लने की क्षमता होनी चाहिए। जीवन में उतार-चढ़ाव आना वैसे ही स्वाभाविक है, जैसे रात के बाद दिन आना। हमारी वास्तविक परीक्षा विपरीत परिस्थितियों में ही होती है। संकट के काले बादल चाहे खुद पर मँडरा रहे हों अथवा परिवार या मित्र पर इनका डटकर मुकाबला करना चाहिए। कठिन परिस्थितियों से लड़ने के लिए धैर्य, सहनशीलता और शांति ही एकमात्र हथियार है। जीवन एक संग्राम है और इसमें वही व्यक्ति सफलता का दामन थामता है जो या तो परिस्थितियों के अनुकूल हो जाए या परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर ले। जो व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर परिस्थितियों को बदलने की क्षमता रखता है वही फलीभूत होता है। आज का समय विद्यार्थियों के लिए भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। शिक्षण संस्थान बंद हैं, दोस्तों के साथ खेलना बंद है। विद्यार्थियों को इस विपरीत समय को अवसर के रूप में देखना चाहिए। यदि वे ऐसा करने में सफल रहते हैं तो भविष्य में स्वयं को सिद्ध कर सकेंगे। सकारात्मक एवं अथक प्रयासों से अच्छे समाज का निर्माण किया जा सकता है। कोरोना काल अनिश्चित है, इसलिए हमें कोरोना के साथ जीना सीखना होगा। समय का सदुपयोग ही विपरीत परिस्थितियों से निकलने की दिशा को दर्शाता है।

जयबीर सिंह
मुख्याध्यापक मौलिक
रावमावि सैमाण, रोहतक, हरियाणा

2022

जनवरी माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

6 जनवरी- अन्तरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव
9 जनवरी- गुरु गोबिंद सिंह जयंती
10 जनवरी- विश्व हिंदी दिवस
11 जनवरी- लाल बहादुर शास्त्री पुण्यतिथि
12 जनवरी- राष्ट्रीय युवा दिवस
15 जनवरी- भारतीय सेना दिवस
23 जनवरी- नेता जी सुभाष चंद्र बोस जयंती
24 जनवरी- राष्ट्रीय बालिका दिवस
26 जनवरी- गणतंत्र दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Online Trainings

Smt. Rupam Jha

Adapt and change, we all have to. The Pandemic changed the way we conduct our activities while all along maintaining a certain continuity. As trainings are part of the agenda and work plan of REAP Cell, the plunge was taken to conduct trainings online. We did attend some trainings online, conducted by National level Institutes, so were able to grasp the vibe of such trainings.

At the outset, first the names of participants was invited from DIETs. There was to be one participant from DIET faculty and one from school faculty. Upon receiving the required information a letter was dispatched via mail to all the DIETs, informing them that the online training on Action Research has been scheduled for the 28th and 29th of October 2021. Some of the DIET faculty had participated in such trainings and had conducted Action Researches but for the school faculty, it was definitely a novelty. The response to online trainings was mixed, as per the needs of the times and yet missing out on peer group interaction.

Dr. Rajender Pal, Professor NCERT New Delhi, delivered a lecture briefing the participants about Action Research. After tea break Dr. Alka enthralled the

participants with a quiz based on her lecture. The quiz was on the lines of the popular Television serial Kaun Banega Crorepati. The participants had to click on the link in order to log on to the Quiz. The Leader board kept the competitive spirit high. The Day brief session was all abuzz about the Quiz. The winner, with a feather in their cap. After the session, participants had to fill a Google form with five questions based on Dr. Rajender Pal's lecture.

The next day started with a Feedback session of the previous day. In an online session, as there is a need to persuade participants to contribute in terms of thoughts and words, so everyone was encouraged to speak. The first timers and more so the school faculty was asked to share their experience of Day One. The first lecture was by Dr. D N Sansanwal, a Resource Person who keeps the participants engrossed. After Tea Break Dr. Sangita of NCERT took the session on report writing. A Google form of her lecture too was shared with the participants. The task assigned that each district was to generate an Action Research report.

Motivated by the success of the earlier online training, an Online Training on Basic Research Methodology was held from 1st to 3rd December 2021, the process of inviting names from DIETs was followed. To take research to the grass root level, we have decided to incorporate school faculty in our work.

The session on Zoom platform begins with briefing the participants about the training. The participants also shared their expectations from the training and also the relevant topics on which they personally would like to conduct research studies.

The 1st resource person was Dr. Rajender Pal from NCERT New Delhi who introduced what is research and told participants to dispel any fears they have regarding research. In the 2nd session, Dr. D N Sansanwal (retd. Professor) delivered a lecture on Title, Objectives/ Research Questions. A Day Brief, in which participants spoke about their experiences of the day and also mentioned that there was now clarity in their minds regarding research. A Google form bearing 5 questions based on the lecture of Dr. Rajender Pal was shared on the Whats App group with the participants.

Day Two saw Dr. Sansanwal take the first session on Sampling types and procedures. Dr. Alka Singh of CIET, NCERT took the 2nd session on Data collection, tools and techniques. The highlight was an online quiz at the end of the session with a leaderboard as well. The result was nail biting, the person leading all along finally came second.The Day brief was all talk of the quiz.

Day 3 and in the feedback session participants had doubts of the task assigned to them, the making of a research proposal and it was decided that the research associate would take a brief session on writing a research proposal. The 1st session by Dr. D N Sansanwal on Data analysis & interpretation, followed by Dr. Sangita's session on Report writing. Instead of the Day Brief, Research Associate, REAP Cell SCERT explained in brief about what is a research proposal. The task assigned to the participants was that each district was to submit one research proposal. The participants were to answer 5 questions in Google form based on Dr. Sangita's lecture. Tech Team created the Zoom link and live streaming on You Tube as also the Google form.

Online trainings taught us many new facets of conducting trainings. If the topic can hold your interest then participants are attentive throughout. Participant interaction was definitely there and the newness of the topic and its relevance to current times kept the attendees engrossed.The overall experience has motivated us to conduct more such trainings.

Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Twilight is her own Artist

Across the sky's palette spreads the eventide,
As birds take wing & animals for the night hide.
Misty eyes & dewy lips; arrives the magic hour.
For her hourly walk till she opens Night's door.

The sun dons its night cloak & yawns away,
As the stars nudge away clouds, on their way.
On the sky's canvas, twilight's wields her brush,
Colours from periwinkle bluish-purple to blush.

Then over the horizon the sleepy sun retires,
To brighten another day & the moon blinks.
A gentle breeze stirs and sways the trees,
As the moon slowly, silently begins to rise.

Oh the beauty of that moment, my heart sighed,
Then suddenly it all faded away; I wondered why?
Is temperamental twilight her own artist?
Whimsical, flighty & gone with a flick of her wrist.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Change your mind set

New words added in the dictionary of a student's life. Go to Google and search for skills a student should possess. Ask a parent, what they want their child to learn from a school. You will find the same answer, skills related to academics and skills related to personality. Who will teach more than a time has taught all of us? A skill that was not there in the list but has emerged in the last two years i.e., adaptive skill. Students need to adapt to the situation and be ready to switch their minds as per the need of the hour. Schools are trying to conduct online classes. There was a time when parents and schools were against screen time. Now, schools and parents are compelling students to be in front of the screen for more than ten hours - to attend classes, to do homework, to attend coaching classes, attend hobby classes, etc. Students have adapted themselves from minimum screen time to maximum screen time. As an adult, have we asked students whether they are comfortable with this adaptation? Probably not, because this is the demand of time. Learning should go on irrespective of time and situation. It is important to make each student comfortable with the environment. When the time has changed, the learning environment has changed, learning methodology has changed then why are learning goals same?

Each one of us should think about it. What can we do to make learning fun, engaging, interesting and productive?

According to me, there is only one answer. Though academics are important, however, developing skills like adaptive, positive thinking, loving yourself, loving your family, supporting others, and smiling always are important and need of the hour. Spend quality time with family members and understanding each other, should be given priority.

We used to talk about good times and bad times. There is a new word added in the dictionary of life that is Covid times. A time, which is unpredictable and unforgettable. No one can control if anything bad happened or will happen. However, students must have good memories and must learn something fruitful, as well. Hope to see this time as history with learnings in the future.

Alka Akhil Kumar
Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Live a Truthful life

Dr. Himanshu Garg

Rishi Vyas said that truth is the symbol of a strong character. Truth has been enumerated as a Godly quality by all the religions. Spiritual Truth is also a branch of truth which serves the purpose of improving the lives of the majority of people.

A seeker of truth should always speak in the interest of everyone's welfare and progress. It is useless if it does not spawn welfare or progress. Everyone must follow this rule. Parents must speak the truth to show this quality in their children as well as for their progress. Teachers must speak truth for the welfare of their students as well as for the institution. Leaders must speak truth for the progress of their nation.

Truthfulness gives strength to our relationships too. We must follow it at home as well as in the workplace to see a wonderful output. The person who always speaks truth has a unique image and respect in society. Even the enemies of a true person have strong faith on the person. Those who are truthful in fulfilling their responsibilities, are practicing the truth of divinity.

Do not speak falsehood, which gives enjoyment to the listeners for a short period and hurts people for their whole life. Follow the path of truth. But take care that the truth you speak does not harm or hurt anyone in your family or in society.

Asstt. Professor
Govt. College for women, Jind
Himanshujind@yahoo.com

The Sea Sighs

You are like the wind & I am like the sea.
You can stir my emotions into a stormy sea.
Or glide your hands caressing me gently,
Stroking me lovingly into a sea of tranquility.

You are what I always aspired to be,
You roam the Earth so light and carefree.
But to forever wash the shores of my native land,
Is the destiny, life for a sea has planned?

By the cares of this world you don't seem bound,
But by chasms underneath I'm bogged down.
Deep as Mariana's Trench or jagged rocks on shallow shores.
Whereas blowing carefree ice kisses on the Everest you soar.

You can blow away clouds making the sun shine through,
Or gather me into a tempest that like hot black tea brews.
Churning submerged emotions out of my soul,
Like a tsunami till it's devoid of feeling at all.

I can't touch you as you soar to high Heavens,
But as I look to the azure hazy blue horizon,
I see a mesmerizing union of the wind & the sea
And I hope that one day that will be my destiny.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

NISHTHA:

An Initiative to Produce Tech-Savvy Teachers

Babita

Continual professional development of teachers is a vital element of school education. With innovations in technology, this element has become indispensable. There is a dire need to equip the teachers digitally and NISHTHA online training is the right approach to produce tech-savvy teachers.

NISHTHA that stands for National Initiative for School Heads and Teachers Holistic Advancement is an initiative of the Department of School Education and Literacy to impart Integrated teacher training to school heads and teachers under the centrally sponsored scheme of Samagra Shiksha. It is the largest teachers' training programme in the world. Online training is imparted via national digital platform - Digital Infrastructure for Knowledge Sharing (DIKSHA). National Education Policy 2020 envisages change in the existing teaching - learning process for improving the quality of school education and Nishtha training is an appropriate step in this regard. Capacity building courses for improving quality of school education through integrated teacher training are available 24×7 for each and every teacher registered on Diksha app. All the school heads and teachers can complete these courses as per their convenience. Nishtha has acquired greater significance due to the unprecedented Covid-19 crisis that led to sudden closure of schools in the country, thereby affecting the teaching - learning process adversely and leading to a demand for digitalisation of education and educators.

Modules 1 to 12 of NISHTHA 2.0 training have been completed by every teacher and school heads across the state making them tech-savvy. These modules have made them competent and built their capacity as a digital educator. This training has enabled the teachers to use inclusive strategies to teach students from diverse groups. A better understanding of personal - social qualities like trustworthiness, positive attitude and empathy in the teachers will build a healthy environment in

the classroom and make the students caring and sensitive. The teachers have been trained to use art pedagogy which can be visual as well as performing and toy pedagogy which will make teaching - learning holistic, joyful and experiential. Use of rubrics designed by the teachers alongwith the students will improve the quality of school based assessment as the students will be provided with useful feedback about their strengths and the areas where they need improvement. Integration of ICT in teaching - learning process has been the key feature of this training. The teachers have become competent enough to store, transmit and receive digital information. They can work for the health and well being of students by making them aware of road safery rules and Prevention of Children from Sexual Offences (POSCO) Act ,2012. Training has been imparted through these courses about the initiatives taken under Samagra Shiksha by the state and central government for inclusive and equitable quality education from pre-school to senior secondary stage in accordance with the Sustainable Development Goal for education. Adequate infrastructure in schools, library

grants for Padhe Bharat Badhe Bharat programme, sports grant for Khele India Khile India programme and grants for uniform, textbooks and Children with Special Needs (CWSN) are the key features of Samgra Shiksha. Kala Utsav competition under Ek Bharat Shresth Bharat programme organised by Samagra Shiksha helps in enhancing interaction between students of diverse cultures.

Nishtha training is an effective medium to achieve improvement in the learning outcomes, build the capacity of teachers and make them tech-savvy to provide equitable and inclusive quality education to all. It trains the teachers as first level counsellors who understand the emotional, physical, social and psychological needs of the students and motivates the teachers to encourage critical thinking in the students.

PGT English
GSSS Rewari

Queenie

This story has won 3rd prize at the Asian Literary Society's Wordsmith Awards 2021

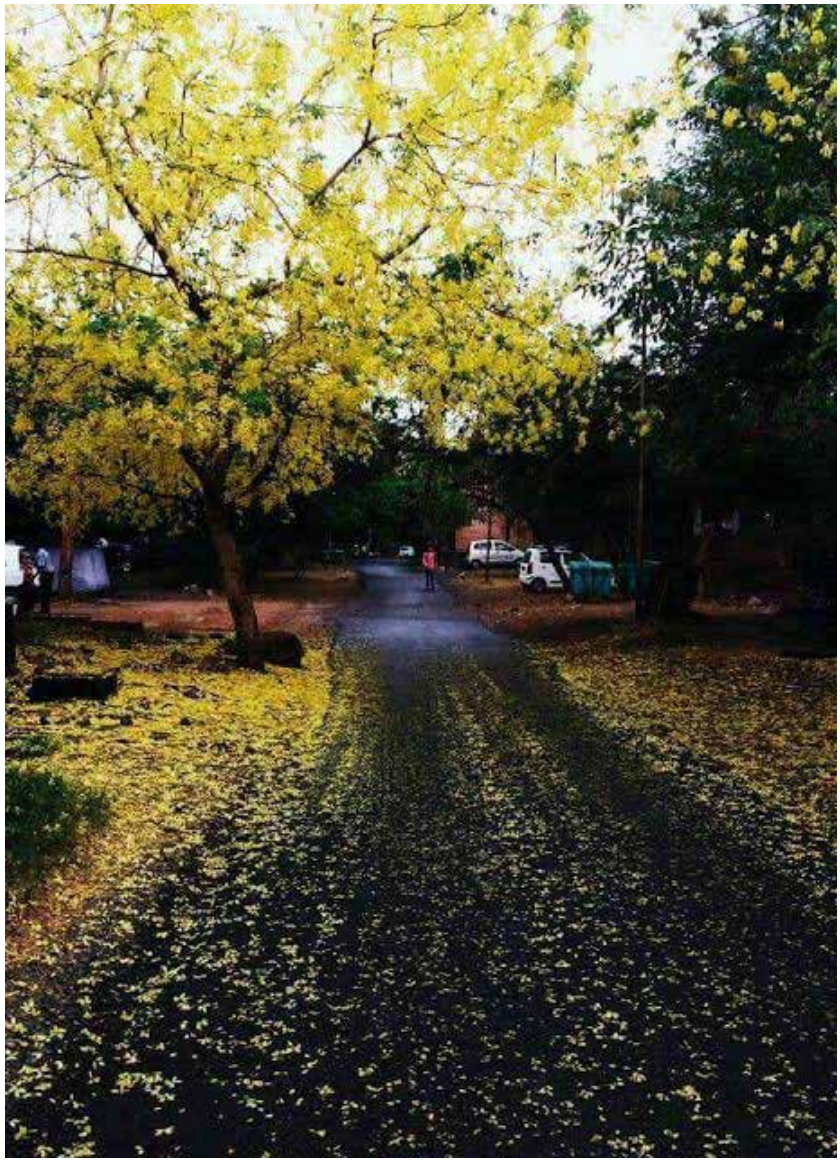

Dr. Deviyani Singh

I looked over my shoulder and saw two guys on a scooter following me. As they came abreast the pillion rider gave me a tight slap on my back. The blow sent me wobbling as I tried to control my cycle but I crashed into a bramble bush grazing my knees badly. I picked my cycle up and limped back to the girl's hostel. The crowd outside the college dhabba gathered around.

"What happened to you Queenie? You seem to have had a bad fall?' a low contralto voice enquired.

I turned around to see Dee astride on her black Kinetic Honda. I told her what had happened and she immediately sped off to catch the eve teasers.

The others they just kept asking me questions.

"How come you have a slap mark on your left shoulder when the boys on the scooter were on your right?"

Only a few of them had the sense to offer me water. I refused a cup of over sweetened tea. Another held out a glass of nimbu pani that had more ice in it then lemonade. I dipped my fingers into it fished out the ice and placed it on my left shoulder. Someone ran to get a first aid box.

"She must be exhausted, make her sit down" opined another voice.

"Yes indeed, 'she' is tired" I retorted. What a bunch of morons these people were! Not even realizing the trauma I had just been through. Only Dee… and speaking of her - there she was like a female Knight on her black steed, hair flying in the wild wind. She screeched to a halt right in front of the dhabba; braking hard on the cobbled stones in a cloud of dust.

"I think whoever it was have now disappeared Queenie. I checked with the guards at both gates if some outsiders had entered the walled campus. But

there was no record of them. Maybe they had slipped past unnoticed."

"It's alright Dee at least you tried, Thanks for that."

Yes, Dee was the only one I could trust and the only sensible person on this proletariat campus. She helped me up to my room. She was strong this Dee and had a surprising amount of brains for a North Indian and a Jat too at that.

Oh, I forgot to tell you about me. You already know my name. Well it rings true as I was born in a royal family of South India. I was the only child and my parents doted on me. Needless to say I was treated like royalty everywhere I went except in this damn leftist campus where they think of me as a despicable bourgeoisie. I am beautiful too but again not in a North Indian way where all they see is the color of your skin - the paler the better and if you're 'halthi' as they pronounce it. 'Makhna' they call girls here, isn't that just too degrading? I wouldn't like being called caramel or toffee. I swear I hear them say in nasty whispers behind my back,

"Coffee, coffee" – I don't know if they are referring to my lineage or complexion. I have huge black eyes with long cow lashes. But unfortunately I have deep dark circles under my eyes.

"Why don't you put cucumber slices on your eyes?" says my Chinki neighbour.

"Like hell you would know about eyes a lot huh? I'll believe you the day I can at least see yours." I chuckle as she runs away. I tell you these morons can't even take a joke.

They don't understand that my dark

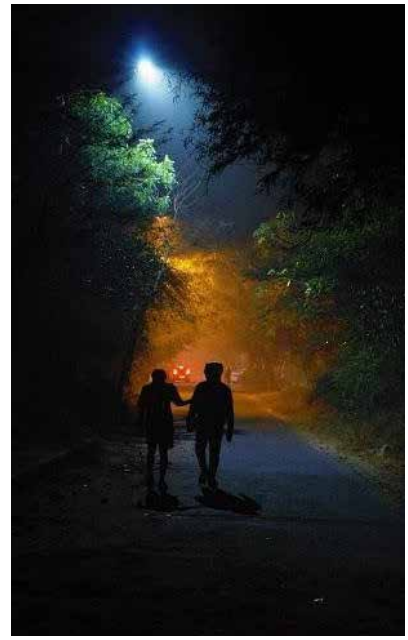

circles are not due to lack of sleep that they can be fixed with some chopped vegetables. I can't sleep at all. I have a hyperactive brain that just refuses to shut down.

I rub my eyes and go down to the mess hall where they serve the same insipid breakfast every single day. Oh wait, today is Tuesday its South Indian on the menu.

"Goooood Morning", Dee beams at me holding a plate with a limp dosa and watery sambhar. Once I found a cockroach in the rice. I complained to the Head Cook and he claims it's a badi elaichi! He should be called the Head Crook…

Dee interrupts my thoughts,

"Could you get any sleep Queenie?" she looks concerned.

The Biharan Miss Jha interrupts, "Oh ya I heard her snoring at 3am," she guffaws, smacking her lips and chewing with her mouth open.

Miss Jha is studying for the Civil Services and burns the midnight oil but her manners are nonexistent.

I roll up my eyes till Dee can see the whites and she agrees they are red.

I'm also thinking of giving the Civil Services a shot. They could do with some people with actual brains for a

change. I study only 6 hours a day unlike the Biharis who believe in slogging and mugging up like donkeys for 18 hours at a stretch. The terrible Northern winter is over now. I don't know how these people can bear to wear so many woolens and sleep in heavy quilts. I get rashes and feel suffocated. It's March and these Northies are celebrating the crazy festival of Holi.

"Oh come on, let's go outside and join the crowd, we will have fun." Dee is trying to coax me play.

"It's just another excuse for these frustrated males here to get to misbehave with the girls. I don't want to go and I'm allergic to those colors" I inform her.

We go down for breakfast together, I can't stand the coffee or metallic tea they prepare here so I help myself to some milk. I have chugged down a glass when I notice there is some green residue. I spit it out spraying a giggling Miss Jha. She doesn't seem to mind as she's already had umpteen glasses of it. Yup, you guessed right it's something mixed with milk and the mess staff didn't even have the courtsey to tell me.

"You will be alright just sleep it off" Dee helps me back to me room.

"Wait I want to brush my teeth first to get rid of the nasty taste." I squeeze out a generous dollop of my special sensitive teeth toothpaste. These hostellers all just wash up in their attached balconies.

"Right now I'm not feeling well enough to make it to the common loo anyways. Don't worry; nothing can make me sleep Dee."

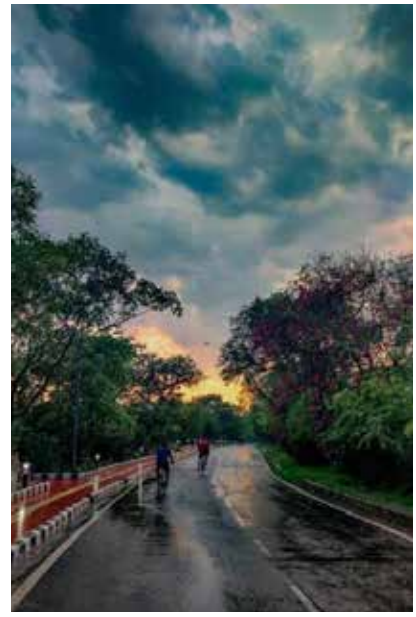

I keep brushing for 5 minutes and Dee has to stop me.

I lie down and my head sways. I sit up immediately and hold the sides of my bed. "I'm flying Dee, I swear I'm flying! Come sit behind in my biplane, and hold on tight." Dee told me later I kept flying for an hour; I believe her.

"Still no sleep. I told you so Dee." She offers me some medicines but I don't believe they will make me better so I refuse to take them.

The Civil Services Prelims are due in June so I begin my preparations, making frequent trips to the library. If only those boys would let me be. As if the scooter incident wasn't bad enough. I get up to get a book and when I come back I find a note kept in my file. It reads-

"I watch you every day as you cycle down so gracefully to the library. I notice every detail of your from your silky pony tail to your slender calves. You have beautiful feet. I wish to worship you beautiful Goddess. Please give me a sign."

There is no sign on it and it's all in capitals to avoid any handwriting recognition.

"Give it to me ill check with all the library entries that day." offers Dee gallantly.

The next day I get another note and another till one day it just stops. But it's not over yet, now I start getting post cards in the open mail. I go down to the mess table everyday dreading to find those postcards everyone can read. The language and descriptions are getting increasingly obscene. One even has a bit of hair attached to it.

"I think we should write a complaint letter to the Dean and attach these post cards as proof." Dee is determined to catch the voyeur.

"But I have already burnt all the postcards as they were too obscene to keep, Dee."

Miss Jha interjects, "Did anyone notice there was never any stamp on those postcards and boys are not allowed in

the girl's mess hall… sooo could be an inside job. Don't you think?"

"Or maybe some boy asked the Chowkidar to place it there? Let's go ask him." Dee doesn't give up easy. She's known to be the most helpful and kindest girl in the hostel. She even feeds all the stray cats and dogs with chapattis stolen from the mess.

We go ask the aged Haryanvi Chowkidar. He answers our questions with more questions. "Why are you all encouraging boys? When will you do your Ph.D. if all you read is postcards and notes from boys? Why don't you all give me a camera? Girls keep asking me what their visitors looked like; was he tall, short etc. I don't remember names…" We leave exasperated.

A semester had passed since I joined the University and we have given the Civils. The results are due. I was sure I will pass as I had calculated my marks. But to my shock I have not made it. Neither has Dee. Miss Jha has topped the exam and few of the sloggers have also got through.

"How can this be? I think they don't even check the papers. They just keep aside a random bunch and declare the results." I'm horrified.

"Better luck next time," mumbles Dee.

I decide to bake a fruit cake that day as cooking calms me. I take it to the library canteen to share with my colleagues.

"Dee, please call out the boys from the library, I want to celebrate not getting through this moronic exam."

Dee goes inside while I wait but she takes very long. I'm curious, so I place the cake on a stone pedestal in front of the library. I go inside till I can see them from behind a book rack. I stop in my tracks. Dee is saying something to the boys but they are folding their hands and nodding from side to side.

"Hey come on guys, just come outside and have a piece of cake Queenie baked, don't hurt her feelings. Don't worry at least the fruits are not fake, I'm sure." Dee is winking at them.

I recoil in horror. I run outside and

see Dee's beloved strays are tearing apart my cake to shreds including the cardboard box.

I get on my cycle pedaling furiously and go for a round of the campus to cool off. As I look over my shoulder it's those rogues on the scooter again. They are chasing me. The pillion rider reaches out and grabs my neck. He has a knife in his hand… my cake knife… I pass out.

I wake in hospital in great pain. I have strained my back and have a fractured elbow. My parents are there. They think I'm still unconscious but I hear my Father speaking.

"Nurse Dee I'm sorry your idea of playing into her delusions to bring her back into reality isn't working. In fact she's gotten worse."

What the devil are they talking about? I must be dreaming. They want to take me back home.

But I didn't listen to them. I went back to the same University as soon as I recovered. I completed my Ph.D. I got a job there in the English Department. How could they ignore a genius like me? I became Head of the School of English Drama…

Disclaimer:-This is a work of fiction. All the names, characters, places, events are the product of the author's imagination. No malice is intended towards any group, or community.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Compendium of Academic Courses After +2

BACHELOR OF ARTS

Introduction

Bachelor of Arts is a three year degree course after +2 in which mostly 4 or 5 subjects are taught such as Hindi, English or other language, Political Science, History, Economics, Geography, Sociology, Psychology or other social science subjects or Fine Arts, Health &Physical Education etc. Specialisation or honours courses can also be done in any one subject as a major such as B.A. in Fine Arts or English etc.

Courses

1. B.A.
2. M.A.
3. Ph. D

Eligibility

10+2

Institutes/Universities

A large number of colleges under central and state universities offer BA degree programmes in the country with various combinations both at Honours and general program level.

DIPLOMA IN ELEMENTARY EDUCATION (D.EL.ED.)/BACHELOR OF EDUCATION (B.Ed.)

Introduction

Diploma in Elementary Education (D.El.Ed/D.Ed) programme is meant for training of in-service teachers working in primary/ upper primary schools. Whereas Bachelor

of Education (B.Ed.) course is meant for training of teachers for teaching at secondary and senior secondary classes.

Courses Offered

1. D.El.Ed/D.Ed.
2. B.Ed.
3. B.Ed. (Special-Visual Impairment)

4. B.Ed. (Special-Hearing Impairment)
5. B.Ed. (Special-Mental Retardation)
6. M.Ed.
7. M.Ed. (Special-Visual Impairment)
8. M.Ed. (Special-Hearing Impairment)
9. M.Ed. (Special- Mental Retardation)
10. M.Ed. (Part Time)
11. Ph.D. (Education)

Eligibility

Eligibility (D.EL.ED) - 10+2 standard examination with 50% marks and teaching experience at the time of seeking admission is also required in some institutes (B.Ed.) - Bachelor of Arts (B.A.) or Bachelor of Science (B.Sc.).

Institutes/Universities

1. National Institute of Open Schooling, Noida
2. Banaras Hindu University, Varanasi, UP
3. University of Lucknow, Lucknow, UP
4. JamiaMilliaIslamia, Delhi
5. Guru Gobind Singh Indraprastha University, Delhi
6. MD University, Rohtak, Haryana
7. Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana
8. Indira Gandhi National Open University, New Delhi
9. Madurai Kamaraj University, Madurai, Tamilnadu
10. State Council of Educational Research and Training, Delhi

CORPORATE INTELLIGENCE

Introduction

Corporate intelligence helps in making business decisions and trustworthy information.

Courses & Eligibility

CIP®-I and Master of CI CIP®-II Module Courses CIP™-I Level Certification requires completion of courses CI 101®, CI 301, CI 302, CI 303, CI 304. Once you have completed these courses you would be eligible to take the exam. Master of CI CIP™-II Level Certification requires completion of courses CI 401, CI 402, CI 403 and CIP™- I certification. You cannot receive the Master of CI CIP™-II certification without first receiving the CIP™-I certification.

strategies. It assesses and gives important information on present and prospective business and other matters to assist companies to avoid risks, venture into new markets/fields, mitigate business problems and carry out investigations. Its activities and work improves business opportunities. It adds to corporate, financial and legal intelligence of a company. Corporate intelligence becomes prerequisite for new investments, combined ventures and procurements/acquisitions. It greatly helps in enhancing business opportunities and on basis of

Colleges/Institutes/Universities

Academy of Competitive Intelligence (ACI) (Accredited Training + Certification Program) 6 th Floor, Tower B, Green Boulevard, Sector 62, Noida, 201301 Website: www.academyci.com

DETECTIVE

Introduction

The work of Private detectives is to investigate multiple areas, ranging from finding missing persons to discovering the cause of a fire, or recovering stolen property to investigating theft. It encompasses

conducting casework, interview witnesses, perform surveillance, and review public and government records to collect information. Cases may at times require investigators to testify in a court or work alongside law enforcement.

Courses

1. Forensic Detective
2. Private Investigator / Detective

Eligibility

10th (SSC) or 10+2 (HSC) or Diploma passed in any discipline from recognized Board/ School/ College OR Basic knowledge about related field. Details are available at link http://www.ifs.edu.in/eligibility.

Institutes/Universities

International Forensic Sciences, Pune, (Court Appointed Commission, Govt. of India & Govt. of Maharashtra Regd. and ISO Certified) Website: www.ifs.ac, www.ifsindia.com

FOOD SCIENCE AND NUTRITION

Introduction

It is the study of understanding the biological and chemical composition of food and how its preservation can affect the level of nutrition. Nutritionist, Diet Therapist, and Aerobic Consultant know the science of Food and Nutrition and integrate it with the production and consumption of food.

Courses

1. (B.Sc.) -Food Science and Nutrition
2. (M.Sc.) -Food Science and Nutrition
3. Ph. D

Eligibility

10+2 examination in any relevant stream

Institutes/Universities

1. Banaras Hindu University, Varanasi
2. BanasthaliVidyapith, Tonk, Rajasthan
3. CSA University of Agriculture and Technology, Kanpur

4. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)
   A number of colleges also offer this course.

FOREIGN LANGUAGES

Introduction

Learning foreign languages not only strengthens better understanding of cultures ,perspectives ,employability but also improves cognitive skills ,concentration span ,memorisation and multi-tasking skills in an individual .

Courses

There are a variety of short & long duration courses to learn languages like Japanese, Italian, German, Russian, Chinese, Portuguese, Spanish, Persian, Arabic and French.

1. Short term (2months-1 year): Certificate / Diploma / Advance Diploma Courses.
2. Long term (2years-3years): Bachelor's Degree & PG Diploma Courses.
3. Masters degree (1 or 2 year): MPhil, MA, Ph. D, etc.
4. 5 year Integrated Masters course
5. Summer courses-21months

Eligibility

10th /10+2 for Diploma & Certificate courses.

10+2 with Diploma or Certificate courses for BA.

The eligibility criteria is also varied for MA among the universities & language centres.

Institutes/Universities

1. Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
2. Central Institute of English & Foreign Languages, Hyderabad.
3. JamiaMilliaIslamia, New Delhi.
4. Aligarh Muslim University, Aligarh.
5. BarkatullahVishwavidyalaya, Bhopal.
6. Banaras Hindu University, Varanasi
7. Madurai Kamaraj University, Madurai.
8. Indira Gandhi National Open University (IGNOU)

HOME SCIENCE

Introduction

Home Science course is the study of the artistic values and the scientific methods employed in home management. It helps the students to have knowledge on diverse aspects of Resource Management, Food Nutrition, Human development, and so on.

Courses

1. B. Sc. in Home Science
2. M.Sc. Home Science
3. Ph.D. in Food and Nutrition
4. Ph.D. in HECM

Eligibility

10+2 or intermediate examination or an equivalent examination with any

two Biology/Natural Sciences, Physical Sciences, Agricultural Sciences and Vocational courses in Home Science

Colleges/Institutes

1. College of Home Science, Bikaner (Rajasthan)
2. College of Home Science, Hyderabad (Andhra Pradesh)
3. College of Home Science, Pantnagar, Uttarakhand.
4. Goa College of Home Science, Goa
5. Government Home Science College, Chandigarh

Amazing Facts

1. **Crayola is a French word that means "Oily chalk."**
2. Pumpkins contain potassium and vitamin A.
3. The greatest mountain range is the Mid-Ocean Ridge, extending 64,374 km from the Arctic Ocean to the Atlantic Ocean.
4. Pepsi got its name from the ingredient pepsin, which is said to aid in digestion, however, it is not known.
5. The spray WD-40 got its name because there were forty attempts needed before the creation of the "water displacing" substance.
6. Contrary to popular beliefs, chocolate does not cause acne.
7. The fastest moving land snake is the Black Mamba, which can move up to 7 miles per hour.
8. Rabbits can live up to ten years.
9. The average life span of a single red blood cell is 120 days.
10. Some Chinese chopsticks contain gold as on of their materials.
11. The chances of making two holes-in-one in a round of golf are one in 67 million.
12. The watch was invented by Peter Henlein of Nuremberg in 1510.
13. The concept of Boxing Day, which is on December 26th, was to give boxes of food and clothing to the poor. It is now viewed in some countries as a time to get merchandise from stores at reduced prices.
14. Isaac Newton used to be a member of parliament .
15. Dumbest Dog: Afghan hound.
16. At just four years old Mozart was able to learn a piece of music in half an hour.
17. It would take twenty new mid-size cars to generate the same amount of pollution that a mid-size 1960's car did.
18. The honey badger can withstand hundreds of bee stings that would otherwise kill another animal.
19. There are 500,000 detectable earthquakes in the world each year.
20. Black pepper is the most popular spice in the world.
21. In Greece, the climate is so warm that many of the cinemas do not even have roofs.
22. The word "moose" comes from the native Algonquian Indian word meaning "twig eater."
23. All 50 states are listed across the top of the Lincoln Memorial on the back of the $5 bill.
24. An armadillo can walk under water.
25. There are over one hundred billion galaxies with each galaxy having billions of stars.
26. The Uape Indians, who live in the Amazon, mix the ashes of their recently cremated relatives with alcohol, then all members of the family drink the mix with fond memories of the deceased.
27. The word "diamond" comes from the Greek word "adamas," which means "unconquerable."
28. On average, a typical dairy cow lies down and stands up about 14 times a day.
29. For the movie "Tootsie" actor Dustin Hoffman thought of the title. His mother used to call him that as a child.
30. The Sears Tower consists of nine framed tubes, which connects nine skyscrapers as one building.

https://greatfacts.com/

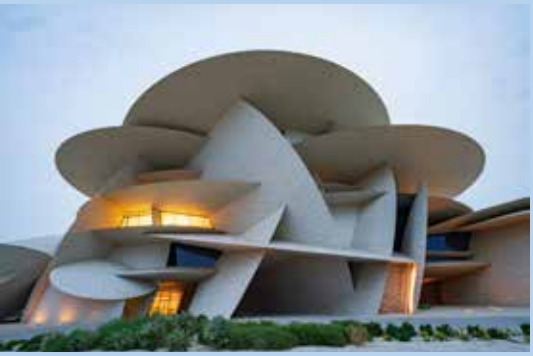

1. What item very commonly worn by people has a hoop, shoulder, mounting and bezel ? **Ring**
2. Name the Spanish coastal region containing the city of Málaga, and towns including Torremolinos, Benalmádena, Fuengirola, and Marbella? **Costa del Sol**
3. What musical instrument generally having 17-23 strings derives its name from Persian meaning 'three strings'? **Sitar**
4. Motorcycling competition which combines flat-track/speedway, road racing and motocross/ trials is commonly called what? **Supermoto**
5. From what country does the word 'chutney' derive? **India**
6. 'The Immortal Game' between a Frenchman and a German in 1851 at Simpsons in London's Strand was contested in what discipline? **Chess**
7. A cicatrix on the skin is more commonly called a what? **Scar**
8. Until London's New College of the Humanities opened in 2012, in what county town, since 1983, was the UK's only private university? **Buckingham**
9. Swiss Peter Sauber established his eponymous brand in what sport in 1993? **Formula One**
10. Sic Bo is a Chinese game of: Wrestling; Sword-fighting; Dice; or Cards? **Dice**
11. In India a kirana is a what? **Shop**
12. In old UK/US capacity measures how many pecks are in a bushel? **Four**
13. The word sentient refers to what characteristic: Feeling/perceiving; Carefulness; Age/wisdom; Stupidity? **Feeling/perceiving**
14. For which art-form did Roman Vitruvius define the three principles of 'firmitas, utilitas, venustas' in the 1st century AD? **Architecture**
15. What is the primary language spoken in Belarus, Kazakhstan, and Kyrgyzstan? **Russian**
16. The insulting slang word 'pleb' - meaning 'common person' or 'commoner' - derives from technical historical references to the 'common people' of which ancient civilization? **Rome**
17. In Spain, El Gordo is a: Bullfighter; National lottery; TV Chef show; or King? **National lottery**
18. The seven base units of the SI (International System of Units) measurement system, with the symbols: m, kg, s, A, K, cd, mol, measure what seven physical quantities? **Length, Mass, Time, Electric Current, Thermodynamic Temperature, Luminous Intensity, Amount of Substance**
19. Internet Corporation Yahoo profited by $3bn in 2012 when it sold half its 40% stake in what vast Chinese web company? **Alibaba**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-121-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

गतांक माह दिसंबर-2021 का अंक पढ़ने का अवसर मिला। पढ़कर जाना कि आईआईटी एडवांस व नीट परीक्षा में हमारे अत्यंत साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले होनहारों ने सुपर-100 में जबरदस्त प्रदर्शन किया है। मुख्यमंत्री महोदय के द्वारा विशेष कार्यक्रम का आयोजन करके इन विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस प्रकार सम्मानित करने से न केवल इन चुनिंदा छात्रों बल्कि अन्य छात्रों के हौसले को भी पंख लगेंगे। सुपर-100 कार्यक्रम की नींव को और मजबूत बनाने के लिए नौवीं एवं दसवीं कक्षा के बच्चों के लिए आरंभ किए गए 'बुनियाद' कार्यक्रम के विषय में भी जानकारी मिली। 'निपुण भारत' योजना भी एक अच्छी पहल है। 'मधुर यादें छोड़ गया मोरनी नेचर कैंप' डॉ.ओम प्रकाश कादयान जी के इस लेख को पढ़कर तो मन-मयूर वहाँ जाने लिए नाचने लगा। लेख 'देह अधूरी पर आत्मा तो है पूरी' दिल को छूने वाला रहा। उत्कृष्ट विद्यालयों की कड़ी में सिठाना गाँव के सरकारी स्कूल पर लिखा गया लेख अन्य विद्यालयों के लिए प्रेरणास्रोत है। 'बाल सारथी' की सभी रचनाएँ रोचक थीं। कुल मिलाकर एक रोचक व ज्ञानवर्धक अंक लिए संपादक-मंडल 'शिक्षा सारथी' को हार्दिक बधाई व नव वर्ष की शुभकामनाएँ।

नीलम देवी
प्रवक्ता संस्कृत
रावमा विद्यालय गिगनाऊ
खंड-लोहारू, भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,

नमस्कार।

दिसंबर माह का अंक पढ़ने को मिला। एक सुंदर अंक के लिए संपादक महोदय को बधाई। सुपर-100 कार्यक्रम को समर्पित यह अंक हरियाणा सरकार के सार्थक प्रयासों की एक अनूठी पहल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्यों व उद्देश्यों के लिए 'निपुण भारत योजना' के अन्तर्गत 'निपुण हरियाणा मिशन' कार्यक्रम की रूपरेखा और इस पर आयोजित कार्यशाला के बारे में भी पढ़ने को मिला जोकि काफी शिक्षाप्रद रहा। ये कार्यशालाएँ निश्चित रूप से शिक्षा विभाग के लिए संजीवनी हैं। अंक के सभी लेख आकर्षक थे, वे चाहे एडवेंचर से संबंधित लेख हों या फिर 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' से संबंधित। 'भाषा शिक्षण में साहित्य की भूमिका' के अन्तर्गत विद्यालयों में आयोजित पठन-सप्ताह दिल को छूने वाला था। इस संदर्भ में पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी एकदम सटीक लगीं। खेल-खेल में विज्ञान की नवीनतम कड़ी, बाल सारथी व अंग्रेज़ी की अन्य रचनाएँ भी शिक्षाप्रद थीं। निःसंदेह यह अंक अपनी सार्थकता सिद्ध करने वाला रहा। 'शिक्षा सारथी' के समस्त संपादक मंडल को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

पवन कुमार
प्राथमिक अध्यापक
राआसंप्रा विद्यालय, चुंगी नं:-7, लोहारू,
जिला- भिवानी, हरियाणा

हमारा गौरव

काँप उठा करते थे जिसको सुनकर अत्याचारी।
कहाँ गई वह भीषण गर्जन है जिन पर थे बलिहारी।

विश्व गुरु के पद पर था आसीन हमारा भारत।
शिष्य यहाँ बनकर आते थे सुनकर ज्ञान यथार्थ।
करते थे प्रणाम सुबह और शाम तपोभूमि को।
मानवता का पाठ पढ़ाया हमने सदा सभी को।
अंधकार से खींच जगत को उजियारे में लाए।
द्वेष परस्पर खत्म किया और गीत प्रेम के गाए।
जीए सदा परार्थ में नहीं स्वार्थ से हम चिपके।
लड़े सामने शत्रु के कभी वार नहीं किया छिपके।
कथनी और करनी में अंतर, हमने नहीं दिखाया।
जो आया सेवक बनकर उसे स्वामी यहाँ बनाया।
हम उस मिट्टी के पुतले जो सोना उगला करती।
तनिक भूल हो जाने पर जो सत्वर सँभला करती।
साँस-साँस में घुली हुई थी अमृत की रस धारा।
त्याग भोग से संतुलित यह जीवन सदा गुजारा।
ऋषि, मुनि, साधु, संतों के रहे सदा अनुयायी।
सागर मंथन पर शिव बनकर बने विश्व विषपायी।

दूर कहीं से कोई अतिथि जब अपने घर पर आया।
बड़े चाव से आगे बढ़कर उसको गले लगाया।

सत्य-अहिंसा के बल पर दुनिया का हृदय जीता।
सदा सहायक रही विपद में अपनी पावन गीता।
शुद्ध-सात्विक सादा भोजन, था मशहूर हमारा।
भारतीय जीवनशैली को सृष्टि ने सदा स्वीकारा।
छह ऋतुओं का दिव्य समागम देख चकित जग होता।
थका हुआ हर यायावर यहाँ निर्भय होकर सोता।
कभी कुपित नहीं हुए हमारे गगन, शैल और सागर।
पोषित करती रही वसुंधरा हमें विविध वसु उपजा कर।
आदिकाल से प्रकृति के, हम सब रहे पुजारी।
सदा बरसती रही प्रभु की कृपा हम पर सारी।
'महावीर' हम धन्य हुए हैं जन्म यहाँ पर लेकर।
नहीं उऋण हो सकते इससे तन-मन-धन भी देकर।

महावीर सिंह, 'प्रभाकर'
सेवानिवृत्त हिंदी अध्यापक
विद्यालय शिक्षा विभाग
हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

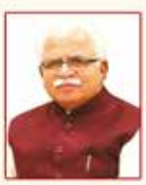

हरियाणा सरकार

2022

विक्रमी संवत् – 2078–79

अंत्योदय उत्थान वर्ष

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनवरी (पौष–माघ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

फरवरी (माघ–फाल्गुन)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

मार्च (फाल्गुन–चैत्र)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अप्रैल (चैत्र–वैशाख)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

मई (वैशाख–ज्येष्ठ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

जून (ज्येष्ठ–आषाढ़)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

जुलाई (आषाढ़–श्रावण)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अगस्त (श्रावण–भाद्रपद)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

सितम्बर (भाद्रपद–आश्विन)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

अक्तूबर (आश्विन–कार्तिक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

नवम्बर (कार्तिक–मार्गशीर्ष)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

दिसम्बर (मार्गशीर्ष–पौष)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

अवकाश सूची

जनवरी
- रविवार, 09 — गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती
- बुधवार, 26 — गणतंत्र दिवस

फरवरी
- शनिवार, 05 — बसंत पंचमी/ सर छोटू राम जयन्ती
- बुधवार, 16 — गुरु रविदास जयन्ती
- शनिवार, 26 — महर्षि दयानंद सरस्वती जयन्ती

मार्च
- मंगलवार, 01 — महा शिवरात्रि
- शुक्रवार, 18 — होली
- बुधवार, 23 — शहीदी दिवस (भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव)

अप्रैल
- मंगलवार, 5 — [illegible]
- रविवार, 10 — राम नवमी
- वीरवार, 14 — डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती/ महावीर जयन्ती
- शुक्रवार, 15 — गुड फ्राइडे

मई
- मंगलवार, 03 — ईद-उल-फितर/परशुराम जयन्ती
- सोमवार, 16 — बुद्ध पूर्णिमा

जून
- वीरवार, 02 — महाराणा प्रताप जयन्ती
- शुक्रवार, 03 — गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस
- मंगलवार, 14 — संत कबीर जयन्ती

जुलाई
- रविवार, 10 — ईद-उल-जुहा/बकरीद
- रविवार, 31 — शहीद ऊधम सिंह शहीदी दिवस/ हरियाली तीज

अगस्त
- मंगलवार, 9 — मुहर्रम
- वीरवार, 11 — रक्षा बंधन
- सोमवार, 15 — स्वतंत्रता दिवस
- वीरवार, 18 — जन्माष्टमी

सितम्बर
- शुक्रवार, 23 — हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस
- सोमवार, 26 — महाराजा अग्रसेन जयन्ती

अक्तूबर
- रविवार, 2 — महात्मा गांधी जयन्ती
- बुधवार, 5 — दशहरा
- रविवार, 9 — मिलाद-उन-नबी/ईद-ए-मिलाद/ महर्षि वाल्मीकि जयन्ती
- वीरवार, 13 — करवाचौथ
- सोमवार, 24 — दीपावली
- मंगलवार, 25 — विश्वकर्मा दिवस
- बुधवार, 26 — गोवर्धन पूजा
- रविवार, 30 — छठ पूजा

नवम्बर
- मंगलवार, 1 — हरियाणा दिवस
- मंगलवार, 8 — गुरु नानक देव जयन्ती
- वीरवार, 24 — गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस

दिसम्बर
- रविवार, 25 — क्रिसमस
- सोमवार, 26 — शहीद ऊधम सिंह जयन्ती
- वीरवार, 29 — गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती

राजपत्रित अवकाश / प्रतिबंधित अवकाश

सभी रविवार एवं शनिवार का राजपत्रित अवकाश।
कर्मचारी दो प्रतिबंधित अवकाश ले सकते हैं।

संकलन एवं सज्जा – महानिदेशक, सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा | मुद्रण–निदेशक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग, हरियाणा

www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana